



॥ श्रीजिनायनमः ॥ अथ स्तुतिः । त्रयजालि  
ष्यते ॥ अथ पाठं मंगलाय ॥ चोतीसे अति  
सयत्तुर्वीरचान्नातिशये शान्तं सान्नीयस्मि  
सरदिमनवि । शिंघासणसंपत्तं ॥ १ ॥ गत  
शिंघासणवेठान्नां एदिष्ठीन्निविजन  
गुणमणिं शान्तिदीपेण निम्नलज्जो  
लहिजे परमहोदवां ए ॥ कसमांजलीमि  
त्तेन आदिजिणंद्या ॥ तीराचरणाक्रमल  
चोदीरा ॥ पूजारे चोदीसा ॥ सीत्ती चोदीअ

जिणंदा कुण॥ एम कही चरण टी की द  
जे॥ गाथा॥ जिणि पुण पन वरम्पि॥ तमु  
रुमु रुमु रुकुडा रुकु रुमुगाल आरोप हां जे  
तिसरंग निरत॥ १॥ जल॥ जीनि मन्नात  
ममुण आणंदि॥ दुगाल संगे जे हुन्ना फेदी  
जे परमेश्वर निज पद लीन॥ प्रजी पुण मोहन  
रुमु रुकु दीन॥ कुण द्रां ति जिणंदा॥ तीव गा  
था॥ निमल गुण वर स क र निमल गुण  
संयुक्त निमल धाम वरिदा वर री परम

प्राधत्त १॥ गाल ॥ लीकालीक प्रकाशक  
नोणी ॥ न विजय न जगुं ह्रीं नोणी परमा  
नंदुतणी निस्तोदणी ॥ ६॥ तत्तगरेदुं न हं व ह  
रोणी ॥ कुण निमजिणं दाती ॥ गोथ्या ॥ जि  
सिद्धा सिशं तिजे ॥ सिशं संतं अणं टज सुआ  
लं व न व वियमण से से वी न्न रिहं ता ॥ ७॥  
॥ त्रिवसरवकारण जे ह त्रिकाले सम परिण  
मे ज गूढ निहलि ॥ उच प्रसाधत प्रजग दिवसि  
इंद्रादिकं ज सुचरण यजाले ॥ कुण ॥ पा सति

[illegible]

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
अप्रतिदीपे । इत्युक्तं जगन्नाथेन । इत्युक्तं जगन्नाथेन ।  
हर । यद्दमसरोवरद्वारम् ॥ २ ॥ इत्युक्तं जगन्नाथेन ।  
दिविजाताजी । इत्युक्तं जगन्नाथेन ।  
न । इत्युक्तं जगन्नाथेन ।  
भुम् । इत्युक्तं जगन्नाथेन ।  
राजा । इत्युक्तं जगन्नाथेन ।  
पकर । इत्युक्तं जगन्नाथेन ।  
सक । इत्युक्तं जगन्नाथेन ।

[illegible]

॥ ५ ॥ स न वै लाल मने ली र्थ न यं । ज न र्थ  
इति क हर्ष स म्प्रा स क्त त न्म । त्रि यु । ॥ ५ ॥  
जीवा व ध्वा इत ध्वा इत्य इत्त म्प्री वा । ॥ ६ ॥ वा  
श्री सां ति जि न नी क ल स क हि स क वि म  
सा ग र स र ए । श्री ति र्थ प त्रि नि क ल स म्प्री ज  
ना गा इ ये सा म्प कार । न र वि ल प्पे स ए ड्ड वि  
हं स ए न र्थि क म्प्री ध्वा र ति हं रा । ॥ ७ ॥  
ह म्प्री त्व न्प्री यो ज न य क्त स । त्रि यु । ॥ ८ ॥



विष्णुदेवदेवि श्री उच्चैःश्रवणवैवर्तेया  
पीसन्नातयापुण्यै नरी ॥ जल ॥ फरन  
य कज्जिनी नमोज करक मनेव व्यापा  
चरुयेजीन्मलीसय महिम विस्तस्याना  
तक विधिजीतवचतीसन्नागलवहे सु  
रकोमीजीजीनदरस एनेउमहे ॥ नूटक  
सरकोमकीमीनाचली ॥ वलैनाथसुचण  
एन विली ॥ अयत्तरुकीमी हाथजोमी ॥ हाव  
नावदेयावली ॥ जयजयिष्टं निनराज न

गुरु। एतद्विष्णुः प्रह्लादः। नृपः सोऽपि नृपः।  
अध्वरजीवन एकतेजःगदीसः॥ जलः ०६  
सुरगिरवरजी। गुरुकलमेदि। नृपः सोऽपि  
गिरसिलनृपः। सिंहसणनृपः। नृपः सोऽपि  
हं नृपः। नृपः सोऽपि नृपः। नृपः सोऽपि नृपः।  
जीतिहं सूर्यतिआवीरसा॥ इटक॥ नृपः  
विया। सूर्यति सदनः। नृपः सोऽपि नृपः।  
वरे। सिद्धार्थपुत्रः। नृपः सोऽपि नृपः।  
नृपः सोऽपि नृपः। नृपः सोऽपि नृपः।

देवकी देवी विधि। निरुद्ध नायक निरुद्ध  
नेत्रे नैवेद्य दत्तौ॥३॥ छल॥ शांति  
ने कारण इह कलसा नरे एहनी देशी॥  
ज्वात्मसमधन रसीदिव कीली छुषी उद्भसीने  
धसी श्री लसागर सी॥ पञ्चम हृगंग यमुना  
नदी तीर्त्त लक्ष्मी जले वा चणी तेन॥१॥  
जाति क्षम कलस करि सहस्र प्रतीक्षा व  
न्त्या मुरहि जाते सुनतरा उपगरण पु  
ष्प त्रैगीरी यमुना सदा न्यायेना सीया लेम

आंकी जने ॥२॥ स कर देवता गावता  
तिरिय नर नमरने छुषिय जावता ॥ अज  
नम सगति भुक्षी नमत इम जावता ॥ अज  
म कित बीज निज जात नमरी यत्न दत्त  
पांणी निसेन किज न चिन्ता ॥ अज निहरी  
वरी वर ना बतही स कउ दल न चि न देय  
म न न हय ही ॥ गाथा ॥ अज देव नमरा नम  
न न दिव पुत्रे ॥ अज देव नमरा नम

[illegible]

[illegible]

दिष्वाकैवयं ज्ञानफलं तस्मात् दिव्यचित्त  
मकार ॥ ५ ॥ श्वरतरंगस्तु निम्न आलारंगि  
राजसागर उवजाय इति धर्मदीपचंद्र  
युपावकास्तु गुरुतणोस्तपसाय दिव्यचं  
दजिन्ननक्ति गायो जिनममहे च वचं दधि  
ध्वं जन्मं कुं रे न लस्ये ॥ संधसकल आणं  
द ॥ ७ ॥ रागवेला न ल ॥ इमं पूजा न गते  
करी ॥ आतमहित काजात जीय वीजाव  
निज नावता रमतां शी वराज ॥ ८ ॥ का

[illegible]





। अथ अष्टका रीप्पुजालिख्यते ॥ इह  
स्वस्ति श्रीसूक्ष्मशरवा कल्पवेलनोसार ॥  
पूजानविजिननीकरो ॥ अष्टनेदस्वविचार  
जल ॥ गंगामगधक्षिरनिधिः शुभदमि श्रि  
तसारस्वतोद्भिः शुचिजले ॥ करोजिनस्नान  
उदार ॥ मणिकनकादिकञ्जविधुकर  
नरिकलसंस्कार ॥ सन्नरुचिजेजिनवरन्हवे  
तस्तु नही डरत प्रचार ॥ १ ॥ त्रिरुसिम्बरजिम  
पुरवर ॥ जिनवरन्हवणञ्जमान ॥ करताव

रक्षा निजगुण। समकितवृद्धिनी ध्यान॥३॥  
जिनरीन्त्रसर। वृद्धावे। स्नात्रकरी एम-  
सी सपावे। जिहलगे स्वरगिरिजं वृद्धीवो।  
मतलाभायजी चिरंजीवो॥४॥ श्लोकः॥  
भवकेवलनासननास्करं। जगतजं उमहे  
कारणं। जिनवरं ब्रजमानजलो घृत। सु नि-  
नः सपयामि विश्वधरा। १॥ १॥ परमा-  
नंता गपं न संशय्ये। जन्मजर निदा-  
लायु। ॥५॥ नृते जितेन्द्रिया स्व

इतीजलक्षणा॥ अथ चंदनक्षणा॥ इह  
वाचनाचंदनकमकमा॥ गृह्यनद्वेष्टमसोह  
जिनतनुलेवेतसुटहे। मीहृन्नापदिकार  
॥१॥ गल॥ हृदसंतापनिवारणद्वारा  
सकृन्नवत्ति। परमअनिहान्तरिहंततनु  
चरवीनविनिस्त। निजसुपेउपयोगीधर  
निजगुणगीह। नवचंदनसकृन्नावध्या दानि  
हृदअवेह॥१॥ जिनतनुचरचतंसकल  
नारकी कहिकुलहलहतात्मानायाकी

रक्षा निजगुण। समकितवृद्धिनी ध्यान॥३॥ ह  
जनेन शिवाय संसारे दुष्टा विभ्रान्नात्र करी एव  
सी सपदे। जिहं लगे स्वरगिरि जं वृद्धी वी। अ  
मत एवासाय जौ चिरं वी वी॥४॥ श्लोकः॥ वि  
भवन्ति वलनासननां स्वरं जगत जं वृद्धी वी  
कारणं। जिनवरं वृद्धी मां न जलो घृता। शुचि म  
नः स्तुपयामि विशुद्ध ए। ॥५॥ ॐ नमो परमात्मने न  
नं ता ग्यां लसं रुद्रैः जन्म जरा मृत्यु निवार  
णाय ॥६॥ नमो जिनैः प्रयाजं दं यजामहे स्वाहा

इतीजलमजा॥ अथ चंदनमजा॥ इह  
वाचनाचंदनकमकसा॥ अथ चंदनमसोः  
जिनतनुलेवेतसुदले। मीहंलाददिफार  
॥१॥ जल॥ इह संतापनिवारसलारण  
सकनवत्तिता। परमअनिहअरिहंतलनु  
चरंचोन्नदिनिता। निजसुवेउपयोगीधर  
निजगुणगेह। नावचंदनसकनभावही दां  
इहअवेह॥१॥ जिनतनु॥ इह संताप  
नारकी कहैइहइहइह इहअवअवअव

रिमा एव सुत दत्त वि। परमत त्वमयं हिय  
जामहं॥ नैंदीयपि॥ अनंताप॥ जनमप॥ पु  
ष्पयजामहे स्वाहा॥ इतीक्ष्ण प्रजा॥ अ  
थवीष्णीधुप प्रजा॥ ७८॥ कलमगरमृगम  
दतगरान्मंवरुडरकलोवांनमिलसुगंधध  
नसारघन। करीजिननेधूपमंग॥ १॥ जा  
ल॥ धूमघटीजिममहमहे। तिमदहेपात  
कदंद॥ अरतअनादिनीजावि। पावेमनअ  
णंद॥ जैजिनप्रजेधुपे। नवकरूपेफीरलेह

नार्ये पादौ ध्रुव घट्नादौ निश्चयते ॥२॥ जि  
नघरे वासतां धूप घरे मिच्छतुं धिता जाय  
घरे । धूप निमस हत ऊर्ध्वस्वना वै । कार क  
उच गत जाव पादौ ॥३॥ श्लोकः । सकल क  
र्ममिधन दाहने । विमल संस्कार जाव सक धूप  
ने । असु न पुन ज संग दिव्य जने । निम पसे  
पु रती स्तु सुहर्षति ॥४॥ तै परमा तमने श्रु  
कृपे य जा महे स्वाहा ॥५॥ धूप प्रजा ४  
अथ पांचमी दीप प्रजा ॥ उह मणी शु



ॐ॥ निजसत्त्वनेसनमुउनमुअनावेजेह ग्या  
नावेजेह ग्या ठावेनावेस्वस्तिक एह॥२॥ स्व  
स्तिक एह तांजेनेपञ्चांगिस्वस्तिम्प्रीनइके  
त्यागजागे। जनमजरा मरणदीनशुभ  
नागे। नियतसिवसमरहेता सञ्जागे॥३॥  
श्लोक॥ हाकलमंगलकेलनकेतने परम  
मंगलनादमयंजने। अयतनध्वजनाइति  
दरिद्रेत्र। दधतिनाथपरीकृतस्वस्तिकां।  
॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने नमः ॥ जय नमः ॥

अजामहिच्छाहा॥ इतीअरुतप्रजा॥  
अथसातमीनेवधप्रजा॥ ७७॥ इत्येव  
चिएकवांनवकुलसद्वनएतदुरवर्णिने  
वधजिनन्नागले॥ इत्येवधतसहस्र॥ ११७  
त॥ जपनश्रीवरदेवदहनधनसुरमीतीक्ष्ण  
सिंहजिसरीयासेविय॥ इत्येवधमी॥ ११८  
॥ कवचसिद्धिदात्रिंशोऽङ्कः  
करीनेवधजिनन्नागले॥ इत्येवधतसहस्र  
नवध॥ ११९॥ विकतांजीवधरिप्रवृत्तामी-

विजना निजपुष्टि के लिये है। अथ न  
 मरती है। न जी जा। अथ जो तात जी जगत  
 पुज्या ॥ श्लोक ॥ सकल पुष्टि संग विवर्ज  
 न सहज नित नाना विनासका। सरस नो ज  
 न न प्रविष्टि दनात्। परम निवृत्ति ना तम हे  
 हे ॥ १ ॥ नैव यज ॥ नैव यज ॥ नैव यज  
 महे स्वाहा ॥ इती नैव यज ॥ अथ न  
 मी फल प्रजा ॥ इह ॥ पदवी जो रूजिन  
 करी ॥ वदतों सी

फलनिष्ठे। इत्यदि। त्रैलोक्ये। १०। गोल।।  
श्रीफलकदलसुरंगना। रंगी। त्रैलोक्यसारः।  
नमंजीरीजंवीरदंष्ट्रमकंगा। प्रतबीजस्फ  
र। मधुरसुस्वादिकउत्तमलीकननादित  
जेह वरणगंधादिकरमणीक। त्रैलोक्यफल  
ठीकेतेह॥१॥ फलर्गरेषु जतां जगतस्वा  
मी। मनुजगंतवेलहिसफलपांसीसकल  
दुःखिध्वेयगतिनेदरंगी॥ वृष्टीक॥ काटुक  
कर्मविपाकविनासनां। सरसपदफलत्रय

विजना निजपुष्टि जे जग में गे ॥  
महारी रूप जे जा ॥ आप जोत  
पुज्या ॥ प्रसोक ॥ सकल पुज  
न सहस्रनेतन नान विनासकां  
नजद्विनिविद्वन्नात्मा परमनिवृत्ति  
हे ॥ १ ॥ तुं कौण्य ॥ जय श्री ॥ ने  
महेस्वाहा ॥ इतीनेवद्यपूजा  
हमीफलपूजा ॥ इहा ॥ य  
करे ॥ वदता सीवपष्टेई ॥

धुकं प्रयत्नयतीति ॥ श्रीजिज्ञासुजाना इति  
गवांणीरक्षणी ॥ १ ॥ इति त्रुष्टुमन्त्र  
वदं हर्षनरगाद्योष्णीजीनेड। तासफ  
लककृतयीसकलप्राणी। लक्षोऽज्ञानवधे  
न धननिवसानी ॥ २ ॥ श्रीक। इति लिनवर  
वृंदेन लिशंसजयं लिंसकलपुगनिधनं देव  
ने इत्तुजंती। प्रतिदिनमनंतं त्वमुक्तावयं  
ति। परमसहजस्यं जीदोऽष्टोदं पदं लि।  
इतीन्म ए प्रकारी प्रजासंमर्ण ॥ १ ॥ श्री॥

गेनकलं । निहिनसीलुफतसपुत्रीपुर । क  
रुतसिदकन्यायमशुजना ॥ त्रैलोक्यपणे जणे  
फलं यजामहि स्वाहा ॥ इती फलपूजा प  
॥ अथ कलसपूजा ॥ इहा । इमं अविष्  
जितपूजतां । विरचैनेपीरविता । साववच  
नसकलोकरे । बांधेसमकिसवित्त ॥ १ ॥  
बाल ॥ अगिणतयुगमणि । अगैनागर  
वेदिलयाद्याशुतक्षरिनुपमा ॥ श्रीगणेश  
आगरुवसाय । तासचरणकजसेकम





सिद्धकामे॥५॥जल॥तीरयदतिस्मरिहं  
जमी॥धरमधुरंधरदीरीजी॥दिशानात्रमृदव  
रसता॥निजवीरजवमवीरीजी॥तिथि॥  
टक॥वरन्महयनिरम  
नावप्रकासता॥निजशुद्ध  
चरणधिरता  
वत्सलीरज्या  
करुणादेस  
॥१॥जल॥



मिलकोसे ॥५॥ जाल ॥ तीरथपतिअरिहं  
नमी ॥ धरमधुरंदरदीरीजी ॥ दिशानाअमृतव  
रसता ॥ निजवीरजवमवीरीजी ॥ तिथी ॥ तू  
टक ॥ वरअक्षयनिर्मलग्गाननासनस  
जावप्रकासता ॥ निजशुद्धशुद्धान्नात्मनावे  
चरणधिरतावासता ॥ जितनांसकर्मप्रवा  
सयथातिहारजसेनता ॥ जगलंतु  
करुणादेतजगवंतनविकजतनेष्टेनता  
॥१॥ जाल ॥ त्रीजेनववरथानकतपकर

निणव्वं धुजिगं मचि सवइइ धजित्त  
न सप्रण मरे ॥ न विको  
कपदवंदी ॥ जिम चिर कां ले  
सिपर तन त्रीयानो कंदो रे ॥  
उपसमर सनी कंदो व नप सी ॥  
जिहने हियं कलाण कदी दये तर मे पिण  
हु ॥ रुकल न्मद्विक गुण न्मती स  
मी न्मघटा नुरे ॥ नप सी  
ना लनी यमा ट न्म लख कह न्म नि र्त्ता

मुक्तकोनै॥५॥ ज्ञान॥ तीरथपतिअरिहं  
नमी॥ धरमधुरंहरदीयेजी॥ दिशानाअमृतव  
रसता॥ निजवीरजवमवीरीजी॥ ति०॥ नृ  
टक॥ नरअशयनिर्मलग्पांननासनस  
जानप्रकासता॥ निजशुद्धशुद्धान्नात्मनावे  
चरणधिरतावासता॥ जितनांमकर्मप्रवा  
कन्मतीसप्रथातिहारजसेनता॥ जगजंतु  
कलयावेतजगवंतनविकजतनेष्टेनता  
॥१॥ ज्ञान॥ नीजेनदवरथांनकतपकर



करिन्मातृपुत्रं हितं तस्य पारयान्ताम् । इति जन्तु  
परणादिजेनेत्ययम् । गान्निशवरणजे । अ  
स्य रूपे प्रसिद्धम् । अथापारयान्तामी सदा सिद्धबुद्ध  
विज्ञानेन देहवगात्मदेहा । रक्षाग्याने मय  
सिद्धिणादिलेसा । सदनंतश्रीत्या । अत  
तिस्वरुपा । अनावाधः प्रसर्ववादी स्व  
रुपा । अतः । सकलकरममल कृत्यकरी  
परणशुद्धस्वरुपोजी । आत्मावाधप्रयुत  
मयी । अतः संपत्तिनूयोजी । नूटकः ।





दक्षिणायामादिभिर्यथाचार्योक्तम् । एतन्मन्त्र  
यारणादिजीवीस्य ॥ १॥ निरावरणं श्री  
मानं विष्णुसिद्धम् । यथाचार्यो भीमसदासिद्धबुध  
विज्ञानो न देहवगात्मदिश्या । रक्षाग्रां निमय  
जानिष्यन् । दिलेसा । सद्यनंतश्रीभ्या । अत  
न्नेति स्वरुपा । अनावाधप्रसर्ववादी स्व  
रुपा । ॥ वा । ॥ सकलकरममलकलकर  
शरणाशुस्वरुपोजी । आत्मावाधप्रचुत  
मयी । ॥ तमसंयतिनूयोजी । ॥ नूतक ॥

नेहकृपासहज ॥ १ ॥ दिव्यदिनसि  
लिकरी ॥ रूपकटाक्षे ॥ अत्रिकां ॥ अत्रविशुभा  
प्रनेता ॥ आदरी ॥ शुभनावगुणपयां ॥ य  
रहित ॥ सिद्धसाधनपररुणी ॥ गुणीराज  
नरकरहंससमवमानमीसिद्धशुभुला  
॥ ७ ॥ ॥ समयपएसंतररुणफरही ॥ ८ ॥  
उहिना ॥ दिरीसा ॥ अदगाहनलहीजेसिद्धये  
॥ ९ ॥ सिद्धनमीतेअसेपरे ॥ नणी ॥ १० ॥ अरुक्का  
धर्मोगनेगदियरिणां ॥ ११ ॥ बंधनअदुनसंग

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ तिजे हथी । ते सिद्ध प्रणमो  
मरे ॥ नमो ॥ निरमल सिद्धि सिल निऊ पर जे  
मण एक जो कंठा सा दिअनंत तिहां स्थित जे  
हनी । ते सिद्ध प्रणमो अंतरे ॥ नमो ॥ जांणे वि  
मनस की कही पर गुण आकत ति म गुण जा  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ तिसमस्तुतिः ॥ सप्तमः  
वि॥ नमो ॥ हल ॥ अथ तिसमस्तुतिः ॥ वि॥ व  
लदं सगमांणीरे दिध्याता निज आलमा ॥ हे  
इसीधुणमांणीरे वि॥ इतीडुजी कलसं  
पूजा ॥ ६७ ॥ हिवे आचार जय दत्त ॥ ध  
जाकरी विसिसा मो हति मरुडिरे हिये रुजे ॥  
वन्नरुस ॥

हणं नमो ॥ २२ ॥ सप्तमस्तुतिः ॥ सप्तमस्तुतिः ॥  
० समाध्यासाय ॥ अथ नमो ॥ सीरुपु ॥ अथ ॥

सत्यं च जगत्सर्वं त्रिजिह्वी । तिसिद्धयुग्मे  
 रंभरे ॥ नमो ॥ निरमलसिद्धि सिलनिऊपर जे  
 यए एकजी कंठ । सादिप्रनंततिहं धितजे  
 हनी । तिसिद्धयुग्मे प्रंतरे ॥ नमो ॥ जांणे वि  
 णनसकी कहियु सुंण आकततिमगुणजा  
 स ॥ जंयन नुण नो लीन न ॥ ॥ नमो ॥ तिसि  
 ष्ठकजास ॥ जंयमा विणनांणी नवमां हि तिसि  
 ष्ठक उडला सरे ॥ नमो ॥ जीतिसुं जीति मि  
 लीज सुख सुख विरमी सकल उपाध ॥

[illegible]

नमस्तस्मैराराजसदृशत्वतोजा । जिनेश्वरभित्त  
उसमाज्यजाजा । षड्वर्गवर्गित्तुलेसीन  
दं । पंचाचारनेपालवेसावधंन ॥ १ ॥ न  
विश्रंणीनेदिनादेसकाले । सदाअप्रभल  
छासूनआले । जिकेसासनाधिरुदियदे  
लीकल्प ॥ जगत्रेचिरंजिदीश्वरजल्पा ॥ २  
जल ॥ आचारिजमुनिपतिगणी । गुणव  
द्विरेक्षणीजी ॥ विद्वानंदरसस्वांदतापर  
नविनीकांजीजी ॥ आप ॥ हटक ॥ शिक्का

महिरमलम्बाधुचिह्नद्वजासालुनिजानिरक्ष  
रथी। वरम्पांनदरसगचरणवीरजसधन  
जावारथी। नविनीजबोधकदत्त्वकोध  
सयजगुणसंपत्तिधरासंवरसमाधिगतज  
पाधिद्विविधतपगुणआगरा॥ जल॥ च  
आचारिजस्तक्षपादले। मागलाभेसाची। नि  
आचारिजनमीयेनेहस। विप्रकरिनेंजाची  
रे॥ नण॥  
धनपनमीहे। जगबीहिनरहेमीलदलेहे।



सुखमुं तेजोहिरे॥ नपे॥ निलम्बप्रमत्तधरसुख  
वएसे॥ नहिदिकथानकथाय॥ जेहनेतेज्ज  
चारिजनमीये॥ अकलसुखमलज्जमाय  
रि॥ नपे॥ जेहीयेसारणवारणचीयण॥ य  
निचीयणवलीजनने॥ पटक्षरीगच्छयेन  
अचारिज॥ तेमांन्योमुनिमनमेरे॥ नपे॥  
आथमीयेजिणसुरजकेवल॥ वांहीजेजग  
दीयो॥ सुवनपदारथप्रमत्तपहुते॥ आचारि  
जचिरंजिवीरे॥ नपे॥ ताल॥ ध्यातज्जाच

रिज्जलः। मा। ल। मं। श्रु। न। ध्वां। ने। शो। यं। च। प्र। स्तां। वि।  
त्ता। तमा। आ। च। रि। ज। हो। य्। ध्वां। ए। रे। ॥ ४ ॥ वि। वि।  
॥ इ। ती। ती। जी। पू। जा। ॥ इ। हा। ॥ पु। श्रु। अ। ने। कं। जं।  
ग। ती। हु। ना। सु। दि। र। सो। ज। त। ग। त। उपः। ध्वा। य्। प। द।  
का। र। दि। दी। अ। नु। न। व। र। स। ने। पा। न्ना। ॥ १ ॥ बं। द। ॥  
श्रु। त। च्छ। वि। श्वा। र। ए। त। प। रा। णां। न। मी। न। नी। वा। य।  
गं। उं। ज। रा। णां। ग। ए। स्स। सा। क्ष। र। ए। त। धि। रा। णां। अ।  
र। वं। भ। ब्ब। त्ति। स। यु। ए। हा। रा। णां। न। हि। स्स। रि। यु। ए। स।  
रि। यु। ए। ने। स। हा। या। न। मु। वा। च। का। त्प। त्कं। मं। दं। मं। हं।

मोया। वंकी धादरांगी। दिस्त्रार्थमांने। जिक्के  
सावधंने। निरुध। विमांने। धरे पंचपंचवनि  
तगुणी। प्रवादि। द्विपोत्तेदने। सिंह। गुणीग  
द्वसंधर। रणिस्तेन नूता। उपाध्यायते वंदीये चि  
तप्रभुता॥ जल॥ स्वन्तिजुवासीतीजुवा। अ  
जवमद्वजुलाजी। सध्वंसीयन्त्रकंचणा। तव  
अजमगुणरत्नाजी॥ त्वं॥ इदं॥ जिरम्पां ब्रह्म  
सुगुप्तगुप्तासुमतिसुमता। छतधरा। स्पादवाद  
वादे। सत्त्वबोधकन्नात्मपरनेजनकर। नवक

कस्य धीरसा सन् बहून् क्षेरी मुनिवरा । सिद्धं  
तवायनदं न समं रणान्निष्ठेण हि कथं हृदयरा ॥ ६ ॥  
३ ॥ द्वादसं गंगसिंहाय करेजे । पारमहंसनज  
य । सन्नम्यार्थं विस्तारसि कले । नमो ललायत  
व्हासुरे ॥ नमो सी ॥ ॥ अथ सन्नम्येदं विज्ञायेत् ॥  
चारिजठवलाय । पवित्रपले जेलहे शिवशो यद्यनम  
इते स्फुटायरे ॥ नमो ॥ मूरध्वलिगनी पादजे प्रभु  
पाहुणनेयवन्नां लेति वलाय स कलिने हजित  
मृन्नम्य रणसविजां गिरे ॥ नमो ॥ राजकुमारपुरिष्ठा

मणिचिंतकी। अचारजपदजोग। जे उ व शाय  
सदा ते नमस्तो नावे नय नय सी गरे ॥ नणे ॥ व  
वला चंदन रस सखवयणि अहितता प्रसवि टा  
ले। ते उ व शाय नमी जे जे वलि। जिन सासन अ  
नूना ले रे ॥ नणे ॥ ७८ ॥ तप सि शायि रत मंद  
दा दवा अंग नी ध्या ता रे उपा ध्या यये आ तमा  
जग बंध व जग चाला रे ॥ विणे ॥ इ ती च उ थी द  
न स प्रजा ॥ इहा ॥ मोक्ष मार्ग साधन नणी साव  
धं न ध्या या जे ह ते मु नि वर पद वंदतां निरमल

एतद्देहः॥१॥ब्रह्म॥साधनसंज्ञाहिन्यजेतः  
एतन्मीरश्चुद्धयादमायंतिगुणिगुहाकलं  
हियाणं।मुनिगसाणंदपयदियाणं।करेसेव  
नास्वरवायकगणिनेंकजवर्णनतेहनीसि  
णीनें।समेतासदापंचसुमतित्रिगुणा।त्रिगुणे  
नहीकामनोगेसुलिता।बलिवंल्लभजिह्वरे  
यंष्टयाले।स्तयामुक्तिनेयीगचारिनपादे।ष्ट  
जंष्टंगयीगेरमेचितवाली।नमुसाधुनेतेहनीज  
पापताली॥७॥सकलविषयविषवारमे

मिथोभीतोसंगीजी॥ नवदेवतावसमावता  
आतमसाधनरेणीजी॥ नूटक॥ जिरमाशुद्ध  
स्वरूपरमदे॥ दिहनिर्मलनिर्मल॥ कालसंग  
लुप्तदिरआसना॥ ध्याननान्यासीसदा॥ लयते  
जंहीविकरसजीवे॥ नहीबीयेयरनी॥ मुनि  
लज्जकरुणासिंधुत्रिभुवनबंधुप्रणामोहित  
जणी॥ वात॥ जिमतसुकुलेनमरीवेसेथी  
नातसुनदुपाई॥ तिइसआतममंतोषंति  
महुनिगोचरीजायरे॥ नणि॥ वंदेइइनेजनि

नलीदि। मटकाय जसिया लाज । अथ लक्ष्मी  
रे नाराधे । वां डले ६६ चले । ॥ न० ॥ अथ लक्ष्मी  
महिले गना धीरी । अथ लक्ष्मी रच । नि । सु  
निम हंत जय । अथ लक्ष्मी । की जे ज । अथ लक्ष्मी  
रे । ॥ न० ॥ नव निध । अथ लक्ष्मी । अथ लक्ष्मी  
हृदय । एह वामु निम । अथ लक्ष्मी । अथ लक्ष्मी  
अथ लक्ष्मी । ॥ न० ॥ सी नानी परि द्वा दी । अथ लक्ष्मी  
अथ लक्ष्मी । अथ लक्ष्मी । अथ लक्ष्मी । अथ लक्ष्मी  
अथ लक्ष्मी । ॥ न० ॥ अथ लक्ष्मी । अथ लक्ष्मी



निष्कामिनीसिंहीजी॥ नवद्वेषलायसमावला  
आतनसाधनरंजीजी॥ नूटक॥ जेरम्माशुद्ध  
स्वरूपरम्ये। दिहनिर्मलनिर्मदा। कालसगा  
हुदादिरन्नासना। आनन्त्रन्यासीसदा। तपति  
जहद्विकरमजीपे। नहीवीपेयरनणी। मुनि  
सज्जकरुणासिंधुनिचुवनबंधुप्रणामी। हित  
नयणी॥ दाता॥ जिमतरुफुलेनमरीबेसेवी  
भातसुनदुपाई। लेइरसआतममंतीयेति  
ममुनिगोचरीजायरे॥ नमो॥ योवेइडीनेजिनि

नलीदि। षट्कायुजं सियावा। न। न। न। न।  
रेष्वा राधे। चांडुते हृदय हरे। न। न। न। न।  
महप्रिलंगना धीरी। न। न। न। न। न। न।  
निमहंत जयदायुत वंदी। कीजे ज न म व दि नो  
रे। न। न। न। न। न। न। न। न।  
हृदय। एह वा मुनि न प्रये जे गगदे। हृदय  
न। न। न। न। न। न। न। न।  
न। न। न। न। न। न। न। न।  
न। न। न। न। न। न। न। न।



नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
सर्वभूतहितं कुरु ॥ सर्वभूतहितं कुरु ॥  
॥ गच्छ ॥ गच्छ ॥ गच्छ ॥ गच्छ ॥ गच्छ ॥  
स्वस्वकीयं कुरु ॥ स्वस्वकीयं कुरु ॥ स्वस्वकीयं कुरु ॥  
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
प्रसादं प्रसादं प्रसादं ॥ प्रसादं प्रसादं प्रसादं ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कल्पकरंकाररत्नयुगे। निजसाधुहृदयेसर  
वकरणी। तत्त्वदाहं पतिगुणे॥ ७॥ ॥  
सुहृदेवगुरुधर्मपरिष्कार। सद्वहणपरिण  
म जेहपांसीजेतेह नमीजे। सम्पद्दर्शननामरे  
॥ १॥ मलनुपसमकथनुपसमकथी। जे  
हेइतिविधुअनंग। सम्पद्दर्शनितेह नमीजे  
निपाधर्मइह रंगरे॥ २॥ पंचाचारनुपस  
मलहिजे। कथनुपसमअसंख एकवारइह  
मकलेसम्पक। दर्शननमीइअअंखरे॥ ३॥

जे विण नः सप्रमोण न होई चिंतित नूतन  
 विफलीत। कथनिरवेंदु। विविध लडी  
 समकित दर्शित वलीतुरे॥ जणे॥ समस्त  
 वीजे जे नमनं करीयो। म्हांतु चारित्र्यो मूल  
 समकित दर्शित निमित्त प्रणमं। निवपं थनुं  
 न्हुं। जणे॥ जणे॥ जणे॥ समसंवेगा  
 कथुणा। ह्यलयपममजे नमवे शे। दरम  
 हिज ज्ञातना। म्हांतु वेनां मधर वेहे।  
 ॥ इती अष्टमी कलश प्रजा।

सप्तमस्य च नदीपतेः त्रिभिः चक्रत यथा ह आ  
धिविद्युत्तमने। दिग्द्वयं अधिकं ब्रुवाह॥ १॥  
ब्रुव॥ अन्ताणसंगो हतवो हरस्स नमो र  
नाणवी वायरस्स। पर्वययारस्स वगारम  
स्स। मन्ताणसवच्चयायासगस्स। होद्रजे हर्ष  
ग्योनमुधपत्तो धीययावर्णनाये विचित्रा  
विन्नीधे। शिलिजोणीये वस्तुषट्द्वयमा  
वा। नृक इत्यथावाह निजत्वात्तमावा। हो  
द्रये च मत्तादिभ्यः नृजिहो। गुक्रपा म्भ्यो जि

मृतातेहनेवलिहिएउपनिषद्मे। त  
हेचिहमांजेमध्यातेषदीये॥७७॥ नठन  
मीपुण्णप्रांनने। स्वपरप्रकाशकभावेजी॥ प  
ऊतधर्मज्ञानंतता। नेदनेदष्टुभावेजी॥ नवे  
नूटक॥॥ जीमुखपरणितसकलरव्यायकले  
धवासविलासन। मतिज्ञादिपंचस्कारविर  
मलसिधसाधनलुता। साक्षदलेगीतस्वरं  
गीप्रथमनेदनेदता। कसिकल्पनेज्ञान। कल्प  
वस्तु। सकलसंसयलेदता॥७८॥



अनन्तविधि विद्या लही इंद्रिय अर्थ विचार  
कृत अर्थ लक्ष्मी विद्या लही इंद्रिय न लिख कल  
आधुरे ॥ नृपि ॥ अथ मग्नाने पद्वे क्रिया  
ली लिखंते नाष्टुं मग्नाने वंदे मग्नाने नीदी  
मग्नाने सिद्धि पद्माष्टुं ॥ नृपि ॥ सकल की  
यह मूल ते अथा ते हनु मूल जे कहि इंद्र ते ह मग्न  
न लिख न लिख वंदी जे ते विद्या कहि कि मर ही इंद्र  
नृपि ॥ मग्न मग्नाने हे जीह सदा गम स्व पर अकर  
अक तेहा दीप क परे निरुत्त न उदगारी ॥ दलि

जिमरवित्राशिमेहरे॥ नमो॥ त्रिदशभुजिदली  
न्यगयोतिषावेमाणीकनैसिद्धातिनकआजीन  
प्रगटमविजिहृष्टीतेम्पानेगुजसुन्दरे॥ नमि  
०॥ ७७॥ ग्णोनावरणीजिकरमठी॥ दक्षी  
ममतमथादरेतेहेइएहजआसगा॥ ग्णान  
अवीलाजादरे॥ दीर्घ॥ इतीसप्तमीकाल  
सप्तजा॥ हूहा॥ अष्टमपदनात्रिभयो॥ प्र  
जोधरीउमिदापुजनअनुजयएसमिति॥  
पातिकहोयउलेद॥ १॥ छंद॥ आराधित

[illegible]

लिखलिनी। तत्त्वरमणजरसुल्लिखी। पररम  
णीयपणीतलेसकलसिद्धानुद्विजी।  
नूटक॥ प्रतिकलन्यावत्वमंजम। तत्  
थीरतादममयी॥ कचिपरमस्वन्तिमुद्रि  
अपदापेचमेवरउपचयी अमायकादिक  
निदधर्मिथारवातेप्रणतिअकवायक  
कलमममलउज्वला कामकममक  
ता॥ जल॥ दिवाविरतनेम्वद्विरतिनी  
हियलीनेअनीरांम। तेचारित्रजगतजय



चरित्रनामनिर्दिष्टेनाम्नं लिखेदुत्तुपगिहेरे  
॥ न विष्णुजालगजं येन चरित्रेनात्तमा। निज  
यन्त्रावसां हिरमलोरे। विष्णुः शुद्धमदं कथ्ये  
मिहवनेन विजमलोरे। इतीन्द्रमयदप्रज  
हृह। कर्मकाष्टप्रतिजालवा। परिहितम  
गनमसां न। तेतपपदप्रजेयद। निरमद  
धरीयोध्योना। ॥ वंद। कर्महुमुदकमहं ज  
निवतवोहरस्सं। नमो गत्वशीण  
वंभणस्स। उस्सप्रगत्याएयसे

इत्युक्तं यत्तु निश्चयं यदि विद्या भूमिदो पयः प्रीय  
तु स्वतः कैलिरितु समग्रं। विद्या वयं मूरारं  
दोषी पिडा वयारं। विजय विजय चक्रं। सिद्ध च  
कं नमामि। निष्कालिक पक्षे कर्म कथा यत्तु  
निष्कालि नमो यो ज्ञां धीया ते ह वा ले। कहो ते ह त  
पक्षाः। नमः नमः तत्तु नमो। कृमा युक्त निहृदुधं  
नमो यो। विष्णु सप्त महिमा यकी लष्टि सिद्धि न  
नमः। नमो यो कर्म नमः। वयं शुद्धि। तपो ते ह त य  
जे ह नमः। नमः दहेते। विष्णु सिद्धि सप्त महिमा

संज्ञेति इमावशुद्धादिपदेषु अनेकैः  
रक्तद्विवजावेत्यनराचपादिभिः। अनेकैः वि-  
गुणैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः।  
विष्णुजयकारपादिभिः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः।  
नमो  
सत्ता। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः।  
अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः।  
अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः।  
अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः।  
अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः। अनेकैः।



न्यासस्तोत्रं श्रीगणेशाय नमः । दासित्वं कृत्वा न्यासद्वयम् ॥  
 इन्द्राय नमः । इन्द्राय नमः । इन्द्राय नमः । इन्द्राय नमः ।  
 सातनये जे न्यासद्वयं कृत्वा न्यासं नेजां लेली ॥ त्र  
 टक ॥ निरधारसेली गुणेषु एतां करे जे ब्रह्म  
 मां नए । जसु करण इहां तत्त्वरमणै थया निरम  
 लध्यां नए । इमं शुद्धं ज्ञानं लीचेतनं प्रकल  
 सिद्धिं मुकुं अरे । अथ यन्मनंतमहंत चिदध  
 नः । परमं न्यासं दत्तावरे ॥ अथ कलशः ॥ २  
 इमं न्यासं कृत्वा कलशं पुनरुदरं सिद्धचक्रं

एवमसीति विद्विष्यते किं हि दर्शनविकार  
प्रत्येकं च रजोमयं सत्त्वं च कर्मण्यसौ च सत्त्वं च  
ग्यो न धरमश्रुता जन्ता पुन्यदीपचंद्रश्रुतं  
शिवकादेव जन्मसंज्ञा ॥ ७ ॥ जालः ॥ जाणंता  
जिह्वा ग्योने अंशुता तेन विमुगतिहिणं द्यजेह  
आदरिये करममपादे तैतपत्रिवत अरुं दे  
रे ॥ ८ ॥ करमनिका छित्तिमिषक्य द्यष्टि  
क्षिमा सहितने करतां ॥ तैतपत्रे मतांते हृ  
दाते ॥ जिनसासनं नृणां तं रे ॥

हिरण्यकेशवकलविहीवेनारप्रसन्नये। अथमा  
लसिधुलदमिधुदं गये। नमो विवेतपनादिरी।  
। नमो॥ फलशिवधुधनो मेहुं सुरनर। अंपदि  
जेहुं सुतय। तेलपसुरतसुसहिआं वांडा। शाय  
मकरंदनमसुरे॥ नमो॥ सर्वमंगलमांहेय  
हिलीमंगल। वरणवीरं जेशुं ध्ये। तेलपपदत्रि  
जलकलनमो जे। वरसहायप्रिवपंथरे॥ न  
मो॥ इमनतयदधुणतां तिहां लीजो। कुवत  
जं॥ श्रीगाल। सुजसविलाखेचेथेथेने

एहम्पारतीकाजरे। नमो॥ जल॥ जल॥  
 शंकरे। परमेश्वरताजरे। जल॥ जल॥  
 तमा। वरतेनिजगुणशेनेरे। वि०॥ १॥ अग  
 मनो आगएतणी। नावतेजांणीसादीरे। अ  
 तमनावेधीरक्तज। परनावेमतराचीरे वि  
 ०॥ १॥ अष्टसकलसमृद्धने। घटमांहेरुद्ध  
 दादीरे। निमलवपदरुद्धजांणीजो। आतम  
 नतेसाथीरे। वि०॥ योगअष्टवलेनिनकसा  
 नलगादीरुद्धतेजांणीरे।

[illegible]

॥ अथ सतरनेदीस्रजा लिख्यते ॥ ५६ ॥  
न वत्तलेन गवेतनी ॥ १ ॥ अथ सतरनेदीस्रजा  
परसिधकीर्धिस्रजा ॥ २ ॥ अथ सतरनेदीस्रजा  
कार ॥ ३ ॥ रागसरपदी ॥ ज्योतिसकलज  
कलजगजागती ॥ अथ सतरनेदीस्रजा  
रसतिसमरिक्तनिंदासतरक्तविधिस्रजा  
तली ॥ पञ्चणीस्रजापरमाणंद ॥ ४ ॥ गाहा ॥ नृ  
वण ॥ विलिवण ॥ अथ सतरनेदीस्रजा  
धरुहणंचपुफरेहणीयं ॥

नयं ॥ ११ ॥ अर्चिस्तु नमो गायत्र्यस्तु नमो रणे ॥ १० ॥  
२॥ मालकलायस्तु नमो वंसधरे ॥ अर्चिस्तु पुष्पध  
गरे च ॥ १२ ॥ अर्चिस्तु मंगलव्यं ॥ १३ ॥ ध्रुव उषे वी ॥ १४ ॥  
ययं ॥ १५ ॥ अर्चिस्तु नमो वज्रं तहानणीयं ॥ १६ ॥ स  
त्तरस्तु विधस्तु जापवरं ॥ ग्पाता अंगमकार  
स्तु नमो सुतास्तु नमो द्विपरे ॥ करिष्ये विधविस्तार  
ध ॥ रागदेसाय ॥ पूर्वमुखसावनं करद्वाराय  
वनं ॥ नमस्तु धर्माधीश्वरी उचतमां नी ॥ १७ ॥ अर्चि  
स्तु ॥ विहितमुखकोसके खिरगंधीदके ॥

विधि। नमस्त्रिजिह्वसुखदं किं न हस्तेन वं ॥ १॥  
नं कुरियवावारदाय हे ॥ अथ वापि ॥ २० ॥  
कुसुमं जली कलश विधमानरली ॥ त्रि ॥  
नवतजिह्वसुखदं निप्रतिमगुमारी ॥ अथ विधि  
हृ ॥ पहिली मजा साचवे ॥ आवक शुच परि  
णोम ॥ शुचिय मालतनु जिन तले ॥ कं रे शुद्ध  
हित कांम ॥ १॥ परमाणं दपियु मरसा ॥ नव  
गुगति सीपांन ॥ धर्म सपतरु सुखदा जलश्रम  
धर ससांग ॥ २॥ राग सारंग.



[illegible]

त्रिलोकिरुमति संग जागीरु दिखि ॥ १०० ॥  
दिनकी रूज मेरे दीन की । कहै साधु की रत  
रंग चरक हरों । जग सर फली मेरे मरु की ॥  
हो मेरी । लिप्य । इती नृवण प्रजा । रागरं  
मगीरी ॥ मरु नृवण जि न मन रंग कर देवा  
गाय ॥ दिवा रं ॥ कृष्ण धुम सिद्ध सत्तु । हो देवा  
वाससुं ॥ शुभं धवस । य शुभिल दि । १ ।  
न चं नृवण चं नृवण मेरी ॥ दिवा नं पा ॥ १०० ॥  
नृवण चं नृवण मेरी ॥ दिवा नं पा ॥ १०० ॥

रयणविगलकचै-गर्थे॥२॥ पञ्चजानुककरयंधे  
सिरेरे। देवां पृथिनालं कं वरुणदरंतरे। उषहरे  
हंरे देवास्त्वय करे। तिलक नवैश्वर्य कीजिये। न  
क्षत्रीय ज्ञानाचा पदसरेरे आवक हवे। आवक ह  
रचै। जिम स्वरगिरे। तिम करे हंरे देवातीम क  
रे। जिमं वरं जिमं मनरं जिये॥४॥ हरे॥ करज।  
विजिं यं वस्त्वय सदना। श्रीजिन चंद सरीरा। तिल  
क नवैश्वर्यं प्रजतां। लहेन वीरधीतीर॥१॥ मि  
तेलापुल्लु देहकी। परमेश्वर सता संग। चिंतवि

दत्तकपुत्रसमी॥ अमसंकेतरी॥ २॥ रागवे  
लातल॥ विलिपनकीजेजीनिनवरञ्जमे जि  
वरञ्जगण्डगंधे॥ विठेकुंकुमचंदमृगजदण्डव  
दस॥ अगमिअतमनरंगे॥ १॥ विठेक्रमज्जुकर  
रखंधेसिरनालकंवउरउदरंतलंगे॥ विलुपति  
अधमिरीकरतविलिपन॥ तगतबुजीललिमव  
गे॥ हेविठ॥ नदअंगनवदलिलककरतह  
गिलसनवेनिधचंगे॥ कहेसाधुतनरुनीकरे  
लदिलसजगलिसैगंगतरंगे॥ हेविठे॥ इतीवी

लेयनप्रजा॥ इह॥ वस्यननुगलवुक्त विमल  
आरेधे जिनअंग॥ लानगपानंदरनिनलहे प्रजा  
नतीयपंअंग॥ रागगीमी॥ कमलकीमलधन  
चंदनचरचित सकुसुंधेअधिवासीआए॥ हे  
अ०॥ कनकमंजितेहयलालपलवसुचि॥ वस  
नसुगंकांतअलिचासीआए॥ हेअ०॥ जिनप  
कलससंगेसुविधमक्रोजथा॥ करियपहिरा  
वणीदीइयेहे॥ हेअ०॥ पापलूहणअंगलूहणीदे  
वने वस्यनुगप्रजमलधरेइयेए॥ अ०॥ राग

बेराही॥ दिवहु अशुः प्रजावन्मोहे जगतगु  
रु नि कीवन्मोहे॥ जगणि॥ दिवहु अहरन्मोहे  
तनी मांयुं॥ उहिहिसवहीहि उहिहिसुगतिदात  
ति एनमिदप्रचुजीके चरण जागु॥ दिवे कहै  
साधुतीजी प्रजाकेवल दंस एनां ए॥ दिवहु अ  
मिददेव उतमवागुं॥ प्रवणमंजल्लु डिः॥  
एनमृतपीताम्बु ॥ १ ॥  
॥ दिवे इतीवतीयवस्त्रप्रजा॥ वरा  
मेरी॥ सीरठ॥ लंहीरे देवावावनी

लेयनप्रजा॥ इह॥ वस्त्रनजुगलजुग विमल  
आर्येये जिननगं॥ लालमपानंदरनिनहे प्रजा  
नृतीत्यप्रंश॥ रागगीमी॥ कमलकीमलधन  
चंद्रनवरचित सुसंधेन्द्राधिवासीआए॥ हे  
नृ०॥ कनकनंजिलेहयलालपलवसुवि॥ वस  
नजुगंकांतनृतिनासीआए॥ हेनृ०॥ जिनप  
जलसंगीसुविधमक्रोजथा॥ करियपहिरा  
वलीलेइयेहे॥ हेनृ० पापलूहणनंगलूहलीदे  
वने वस्त्रजुगप्रजमलधीइयेए॥ नृ०॥ राग

बेशमी॥ दिवहुं अरु॥ प्रजावन्तो हे जगतगु

॥ जगणि॥ दिवहुं अरु॥

हे सवही हिउहि हिमुगति दत्त

॥ प्रभुजी की चरणजगु॥

॥ जी प्रजा की बल दे स एनां॥

देव उत्तम वाणुं प्रवण्यो जलुं दु

॥ दिव इती त्रतीय वस्त्र प्रजा॥ ब्रह्म

॥ सीरत॥



नमसीकमकुंभा॥ चूरणविधिविरचैवास्त  
ह॥ हंरेदेव॥ कुसुमचूरणचंदनमृगमंदा कं  
कीलतलीअधिवासह॥ हंरेदेवावासदि  
सीदिसवासतां॥ इजेजिनअंगउ  
रचैजि॥ हंरेदेवालाबन  
अनुगामिकसरमअनंगुहे  
उह॥ पुजचउष्टीइणपरै  
वास॥ कमदिइरतीडुरेहरे  
अ॥ १॥ रागगिनी॥ मेरेजि

लंदमेलिक॥५०॥

ए।अं पदनेलैकि॥६॥५०॥ सन्नर

जा।

चरणसीवाकि॥६०॥ कुंकुमचंदनहै

चतुर्थीधनकिं॥३॥५०॥

॥६॥ मनविकसेतन

सुप्रजोएपंचमीपोचम

।रागकामीद॥

मालतीरः॥हं नमो कुरु किरणमचकंदसि  
वननाइष्टुहिका॥विनुलसिरिअरवंद॥१॥  
जिनवरचरणजुवरधरेए।मुक्तवतकुसुम  
ननेक॥पुणे॥सिवरमणीसैवरवरे।विध  
जिनप्रणामिनेक॥दिणे॥रागकोनकी॥  
सीहेरीहेमाइ।वनमोहेरीहेमाई।वरलेअहे  
वरले॥विबुधकुसुमजिनचरणे॥अणे॥  
विकसीहसीयजंवेसाहिव्रकांहेजेवेप।ण  
सिधचुहमशुरणे॥१॥सोणे॥पांचप्रीइसा॥

ककुनसुकलतिकी॥हेऊँ॥पंचविखेड  
रंदहरले॥सी०॥२॥कहेसाधुकीरतज  
गतमगवंतकी॥नविकनरांस्वयकरली  
सी०॥इतीपांचमीमजा॥हृ०॥बडीह  
जाएबतीभाहसरनीपुफमालगुणगुंथ  
थावेमलेजेमहलेइषजाल॥१॥रागराम  
गरी॥नागपुनगमंदारनवमालिका  
मालिकासीगपारधिकलिए॥२०॥मरुकद  
गकवकुलतिलकदासंतीका॥लालगुं

लोकसुखमयनीलीर॥१॥नामम०।जासुमय  
मी।रिदेउली।मालती।पंचवलेपिथीमालती  
ए।मालतीनकुंठपीठेवकीलहलहे।जांए  
संतापसज्जमालतीए॥नामम०।रामआ  
साउरी॥दिवा।दामाकेतेजिनअधिकए।ध  
तिमंदचकीरऊंहारेअश्योचकीरकुं।दि  
वदिमजिसचंदे॥देवी॥पांचविधवरणस्वी  
यऊंससंकी।जिसीरणारेअश्योजिष।व  
किहुहुंदे॥देवी॥२॥ठवीतोमरसजात

वमरभूजे। सर्वकारियाणां हारिणि। हारिणि  
महं दे॥ ३॥ दे० कहे साधुजी। नरक नरका  
आशुषा। नविकल गति। दे० जगि। निमि  
दे॥ ४॥ दे०। इती। नजी। पुग। न। न। न।  
इह। कितक नं पक। न। न। न। न। न। न।  
गात। चाति। निमन। न। न। न। न। न। न।  
यमात॥ ५॥ राग। दे०। न। न। न। न। न। न।  
चरचित। विध। पंचन। राग। न। न। न। न। न। न।  
अपे। क। न। न। न। न। न। न।

जासुक्त ॥ १॥ सा लंभी मूलमेन्द्रंगी धैः अंग  
आलंकीये ॥ ॥ हां हां आ अंग आलं कमि  
नमामिनी युगत आलंकीये ॥ रागनेर  
व ॥ पंचवर्णी अंगी रची कुअमजाति  
॥ ॥ यं ॥ ॥ कुंदमच कुंदगुला लसिरी मण  
कर करणी सीवन जाती ॥ ॥ यं ॥ ॥ दमण क  
मस कपा मल अरि वंदे ॥ अंग अजू ही वे उल  
वाली ॥ पारधी चरण कलार मंदरो ॥ वणप  
व अणवनी जाति ॥ ॥ यं ॥ ॥ सरनर किनर

रमणिगतिनिरखीजगदिहृतक्षिति॥१॥  
इतीसातमीएजा॥रागसौरवसांमिरी॥क  
दकीरणवाशिऊजलीजीदेवा॥पावजघ्नयुग्म  
आरीजीयुरक्षिनिषरमृगनामिजाजी॥दि  
चुनरीहणआधिकारीजी॥१॥वस्तुगंध  
जवमोरीजीदेवा॥अशुनकरमरुरीजे  
जी॥आंगणसुरतक्रमोरीजीदेवा॥नन्दक  
मतीजनवीजेजी॥आवाआंगणविदेवात  
वचुनतीजनरीजेजी॥२॥उहा॥अगरये



त्वा रससाथ सज्जनलीला न्यावमीभं धवटीग्रन  
रत्नावेजिन तनुजावसुं ॥ रागसा मेरी सी रत ॥  
एजील नाइजिन वर हे से वीरी माइजीन वर अ  
सुगंधे ॥ हारे हं हं जिन वर अंग सुगंधे ॥ पूरे ॥ गं  
धवटी धन्यार उदरो गोत्र दिष्टं  
पू ॥ न्यावमी पूजा अंगर से कृ  
नत दुरंगे ॥ धर कदर  
मत जा मे ॥ २ ॥ पूरे ॥  
पं धु ज पूजा ॥

सुखं गितम् सुखम् ॥ श्रीदेवि ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥  
धनवतीपूज ॥ बंदवस्तु ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥  
ममयिदं ॥ सुतपताकपंचवर्णाहु ॥ सुमंत  
गुग्घरीयवर्जै ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥  
ऊमतिदलययलनूजै ॥ रागगोमी ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥  
जिमविरवेधजाएविधि ॥ नवमीपूजासुरंगति  
पापप्रातकधजमहन ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥  
रागनदनारयण ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥  
माहु राजकीध्वपि ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥

त्वा रससाथ सज्जल हृदय आवासी भं धवटी धनसा  
रत्ना वेजिन तनु नाव सुं ॥ राग सामेरी सी रत ॥  
धजो हृत्ता प्रसिन्न वर हे से वीरी मा प्रजीन वर अंग  
सुगंधी ॥ हो रे हो हो नि न वर अंग सुगंधी ॥ पूर्ये ॥ गं  
धवटी धन अंग रतु करे गोत्र तिर्थं कर बांधे ॥ १ ॥  
३० ॥ अंगुली प्रजा अंग रसे व्हा रत्ना ल्या वेजि  
न तनु रंगी ॥ धर क प्र ना व घन व वृत्ति सामेरी ॥  
मत्त ना मे ॥ २ ॥ पूर्ये ॥ इती आ व सी प्रजा ॥ अ  
यं धज प्रजा ॥ ३ ॥ उह ॥ मोहन धज धरि मस्त के

सुखं विमलितयुगल ॥ ७८ ॥ विमलितयुगल ॥ ७८ ॥  
 धनवतीपुत्र ॥ बंदवस्तु ॥ ७९ ॥ सत्यनीयल ॥ ८० ॥  
 ममयिदं मे ॥ सुतपताकापंचवर्ण ॥ ८१ ॥ सुमंत  
 गुग्गरीयवर्के ॥ ८२ ॥ अमीनरुहकेगयं ॥ ८३ ॥  
 कमतिदलययलनर्के ॥ ८४ ॥ रागगोमी ॥ ८५ ॥ सुरपति  
 जिमविरवेधजा ॥ ८६ ॥ विधि ॥ नवमीपुत्र ॥ सुरंगति  
 एपरश्रावकधजमहन ॥ ८७ ॥ अपिदं नृश्रुनेग ॥  
 रागनरुनारयण ॥ ८८ ॥ हजमोहनरे ॥ ८९ ॥ मोहने  
 माहुराजकीध्वपि ॥ ९० ॥ मोहनरेध्वपि ॥ ९१ ॥ मोह

नक्षत्रगुरुशुक्रशिविल्लक्ष्मीदेवदेवी। करिष्यंत्यश्वत्थ  
त्रिप्रदिकृष्ण। यक्षवृक्षधूम्रसोहना॥१॥ मणि  
नांतिवृक्षतिलकवृक्षवर्णपौरी। विधकरेध्वज  
कोरीहृत्। नाधुनक्षत्रनक्षत्रीयजाहे॥ सावि॥  
नक्षत्राणिनिजंजायसीहृत्। शिवमंदिरकंअधि  
रोहृत्। जिनमोहोत्तहनाशयणा॥२॥ मणि  
प्रतीनक्षत्रीयजा॥३॥ सिरसोहेजिनवर  
तुल्य। यक्षगुरुशुक्रकलकंता। तिलकनालक्ष्मी  
वृक्षजा। आवणकंरुद्रवदिवंत॥४॥ द्यम

प्रजापतिः सत्यवतीं कथितं ॥ १ ॥  
पतिनिमज्जंसेत्से। हिमं प्रावकमुविदिक॥  
रागन्धरास॥ यांचपीरीज निहूनकरणी  
या। हं एमीतीमां ॥ कलाललसणीया॥ ही ॥  
अहेरेमनहीहेरे। धनीचनीसुलकरकीसनी  
जातिरूपहेहंरेजाणि। मुन्नज्जं कम्पेत्तना॥ ग  
सिरसीणि।  
कंदलहंसभुगलतीजम्बो। उररुल्ले  
वारुंरे। नालहिलकव्योहेत्तंगम॥

पादसमीपं गच्छेत् ॥ १ ॥ अथ तत्संज्ञितं वस्तु ॥  
॥ रागके दारी प्रहृष्टिरसी हेरे । जितं दधिर  
सी हे । हुगलमप्यरियणि जम्यो । पूर्ण । अंगदवा  
ह । हिलकनाकरुत । यजनि को को न धम्यो  
। जि । ॥ १ ॥ अथ तत्संज्ञितं वस्तु ॥  
जि । ॥ अथ तत्संज्ञितं वस्तु ॥ अलं कस्यो । उषके दारव  
मथि । अथ तत्संज्ञितं वस्तु ॥ अथ तत्संज्ञितं वस्तु ॥  
अथ तत्संज्ञितं वस्तु ॥ २ ॥ जि । ॥ इतीदममी  
आचरणं यथा ॥ ३ ॥ ॥ फलधरी अतीथी

नती। पुंकेतुलिङ्गितासिद्धिः ॥ ५ ॥  
 हा। इष्यारमीक्षजन्ममुखा ॥ १ ॥  
 कीजन्मकीलराइवेतिनवगलिका। उं ॥ ५ ॥  
 चकंददरविचकेलएनमपि विठितिलकदृष्ट  
 एकदलेमीगरापरमलोकीमल  
 गलए ॥ १ ॥ प्रनुमुखकुम्भमेरु  
 रथे। कुम्भमेरुविचलीरएएगुल्लचंडीद  
 ऊं वकउन्मयांजाविकाष्टीष्टविहन्वीर  
 ॥ नमो वीर ॥ रागरांमगिरी ॥ मेरीमन



॥ राग के दारी प्रभु मिरसी हेरे । निगंद मिर  
सी है । सुगत मया रस ये जन्मो । पूर्ण । अंगद व  
ज्जलिन कला लखन । यज्जनि को को न धम्ये  
। जिनि ॥ १ ॥ अथ गज्जलन शिल अणमं नल  
जीवि । सुख लख सुख लख कस्यो । उष के दार  
मथ मिरसा सनातन मिरख वरधस्यो । अल  
कल मचल वस्यो ॥ २ ॥ जिनि ॥ इती दयमी  
आ नरण सता ॥ इत्यु ॥ कवधरी अतीयो

नती। कुंहेतिहेतिहेति। रागं गीरीं गीरीं गीरीं  
॥ ५ ॥ इय्यारमं जन्ममुत्तमं ॥ ५ ॥ रागं गीरीं  
कीजन्मं कीलराइवेतिनवगति। कुंहेति  
चकंदरविचकेलएन्मं विंतिनक  
एकदलेमीगरापरमद्यंकीमल  
मलए ॥ ५ ॥ प्रनुमुषकुअमेरत्ते  
रत्ते। कुमुमीहेविचतीरएएएएएए

॥ अथवी॥ रागं गीरीं ॥

॥ १ ॥  
सितजसितदंभवधारीमनीहर। देवततद  
हीसव्यहुरसजिले॥१॥ कृष्ण। मेघे। ऊद्युम  
मंमयमंनपुत्रचंद्रोदयं। कोरलचारुविनां।  
तन्माजे। इन्द्राक्ष्मीप्रजावणीहरं मंगीरी। वि  
बुधविमंनजेसेनिपुरनजे॥ कृष्ण। मेघे इती  
इन्द्राक्ष्मीप्रजा॥ १॥ अथवारमीपुष्पव  
र्जनिप्रजा॥ मेघवरसेनरीकुष्कनादव  
नरी। काहुपरमायकरीकुसुमपमरं। यं

चवरणेवत्प्रेक्षितं यत्किंचिदुत्तरं। एषीन्द्र  
धरदंतेनहीपीठं यमं  
कैमीलेनमरुजमरीसिले। सरसरसरंगति  
णह्यनिवार  
वरे। वारमीपूजतिणपरंरंगरी  
ह॥ वरसेवारमीपूजमे  
याफुल। हरणतायत  
वज्रमूलः। रागनिममूलर॥ ७  
लीन्यावरजे

वरसेगंधीदकमनीहरजनुसमान॥१॥ पु  
षि॥ गमनअगमनकीचीरनहीहेतयुयज  
जिनकोअतिमृत्यु। स्वगुणैगुंजतमधुक  
रएअपत्तलो। मधुरवचनजिनगुणयुलोऊ  
समसुपरिसेवाजोकरै। तयुवीरनहीमुनि  
ले॥२॥ सुषि॥ सम्यसरणयंचवरणअधी।  
दत्ताविबुधरदैसुमनासमां। वरमीधजाअ  
विकसिमकरै। ऊअमविकसहसउचरै।  
सहस्रीमदंधराजवै। जेकरैजेजिनन

मि॥३॥॥॥॥ इतीवोरमीपूजा॥॥॥॥  
 एतेरमीअथंनपूजा॥॥॥॥ रागवसंत॥॥॥  
 ललविमलमिल्याअथंनगुणेंमिल्याअंलर  
 ललतलातंडुलाए।मेषुगसमानकंदिधि  
 येचवरणकं।चंद्रकीएणजेसाऊजलारे॥  
 अण॥॥॥॥ मेलमंगललयेसयलमंगलअवे

॥अवश॥इहा॥तीरमं

॥॥॥



धूपणाचवहमीनारवासा॥१॥ रागवेल  
उल॥ कृष्णागरकरचूर। सीगंधरांदिष्टुं  
दककमेलाययाने। गंधवटीघनम॥२॥  
चूटक॥ गंधवटीघनसारचंदनमृगातसारस  
मेलीये। श्रीवासधूपदशांगज्जंतुएसुरनिव  
डाडमनेलीये। वीरुतियदंमंकनकमंमंधूप  
धंणीकरिधरे। नववृत्तिधूपकरंतजीपुंरो  
गज्जस्तुहरे॥२॥ रागमालदीगीमी॥ सब  
नारलीमथनुमुदरधूपांकरतगंधरयालन





[illegible]

रञ्जोत्रिभुवनकांसुरनरगावेज्जिनचरितं। स  
प्तस्वरमानसेवीश्रीगीतं। पनरमीपूजहरेधरत  
। जिपि॥ इतीपनरमीपूजा॥ इहा॥ करजो  
मिनालिककरी। सजिसुंदरशृणगागार। नवन  
दिकतेजविनेमे। खोलमीपूजासार॥ १॥ क  
म॥ जादादिकवणसुचारुचरणमंयुन॥  
चंशरणगाम्येभ्यासमरूपविसवयसीमधे  
नकुंनलवणावनासुयुणाविकस्सरवइरा  
वाइन्द्रवणाकमरीकुमरीविजेनपुरन

चेति श्रंगारणो ॥ १ ॥ गाथा ॥ तएणं न्द्रं द्रं द्रं

द्वंती ॥ १ ॥ रागत्रिगुणनाट्य ॥ नाचंती कुमा  
रकमरीतागुदिततायेदरेन्द्रयो ॥ ताठ  
नाठ ॥ इण्डिदिस्कीयुं गिन ॥ सुखितलायेदरे  
न्द्र ॥ मुठ ॥ नाठ ॥ वेणुवीणाधुर  
लेडीष्टंगारसाजे तननतनानेदरेन्द्र ॥  
लंछुण ॥ लघुधराधमके ॥ रणणणलाजि ॥

कमलैः॥ नाथैः॥ १॥ कम्यंतीकंचूकीतरणी  
नंगुरीकंकरकशणी॥ सीमंतीकमरइरेअणे  
हस्तकांहावाहीनाथैः॥ ददंतीनमरेरेअणे॥  
३॥ नाथैः॥ सीलमीनाटिकतणी॥ सुरियाभै  
रवणकीनी॥ सुगंधतलाथैः॥ अणे॥ ए  
मन्त्रातेनविद्वलीणा॥ अनंदतलाथैः॥  
अण॥ ४॥ इतीसीतमीपूजा॥ इह॥ तनि  
धनरुदरेअनिधे॥ वाजिन्चोविधवांयांनम  
तनलीनंगवंतकी॥ स॥ ५॥ ऐणीमेनय॥ १॥

[illegible]

१. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 २. ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 ३. ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥  
 ४. ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ५. ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥  
 ६. ॥ श्रीशिवाय नमः ॥  
 ७. ॥ श्रीब्रह्माय नमः ॥  
 ८. ॥ श्रीमहेश्वराय नमः ॥  
 ९. ॥ श्रीनारायणाय नमः ॥  
 १०. ॥ श्रीरामाय नमः ॥  
 ११. ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 १२. ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥  
 १३. ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 १४. ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥  
 १५. ॥ श्रीशिवाय नमः ॥  
 १६. ॥ श्रीब्रह्माय नमः ॥  
 १७. ॥ श्रीमहेश्वराय नमः ॥  
 १८. ॥ श्रीनारायणाय नमः ॥  
 १९. ॥ श्रीरामाय नमः ॥  
 २०. ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥





॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

नमो भगवते वासुदेवाय । जगैजग

तुल्यतोऽप्युजमतिश्रयो

विष्णुपुरे । अहमद्यवा ।

विष्णोः । अक्षयनीदरेऽस

त्तुल्यतोऽप्युजमतिश्रयो

विष्णोः । अक्षयनीदरेऽस

त्तुल्यतोऽप्युजमतिश्रयो

विष्णोः । अक्षयनीदरेऽस

दो। गीमीनीधणीजाचीरे ॥४॥ गुण ॥ अणहल  
पुरपाटणमिप्रतिमा। ब्रवातुणिघरकुंतीरे।  
अश्वनीचमैअश्वनीपीमा। अश्वनीवालवि  
गुतीरे ॥ गुण ॥ ५ ॥ जागंतोजकुजेहनेकहीरे  
मुणीबुदकनेआपेरे। पासजिणेसरकीरे।  
प्रतिमा। मेवकउकमठेतापेरे ॥ गुण ॥ ६ ॥ अह  
उठानेपरगटकरजे। निधागीवनेदेजेरे। अ  
धिकीमलेजिउठोमलेजे। लकापोखमेले  
जेरे ॥ गुण ॥ ७ ॥ नहीआदिसुलीमा

नै। नीर नो धनं । नीरे । पुत्र न न धनं लुप्यीत  
ली मयि धरता नीरे । पुं । ॥ ८॥ मारुत महिलो  
हम मे लिखसे । सारथ्यवा हो गोठीरे । निलवत  
लीची व्याचेष्टा । वस्तुवहेत सुपोठीरे । पुं ।  
॥ ९॥ हुहा । मनसु विहनी उरकं गो । नाने सु  
चतुस्रं गो वीवीने सहपातणी । संचलाव  
हृदिनां ॥ १०॥ वीवीवीले उरकसु । नन  
नरुडे कोश । अदस्रता वपरगट करी नही  
तरु मारे सीहि ॥ ११॥ पातली शते पीतो वीदे ।

॥ हिली ब्यां धेया जाला हलु मलं छे छे छे ने । संत जाल  
वे जहरा जाल ॥ १२ ॥ जाल ॥ एन्का ही जल अये  
रति । आरथ वाहने स्वरुणी जी । पाश्र्वतणी प्रत  
मा तुले जे लेती मिरमत धुले रे ॥ १३ ॥ ऐपे ॥ पो  
चथे वका जे हने अये । अधिकी आपी अवा  
रे । जतन करी पुहुच मिथ्या नक । प्रतिमाल  
एम्पं जाले रे ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ जकने होये बज फल  
दायक । जाला डगीरी कण जे रे । पुजी सप्रण । जी वे  
हने पाया । प्रहनुवीने धुण जे जी ॥ १६ ॥ ॥ सह

जिदिइनेकरचालो॥ न्यायुति त्यांन कछु  
होरे। पाठणमोहेसारथवाहो॥ हीमैतुरक  
देजेतोरे॥ १८५॥ एण॥ तुरकैदीवीजातो गो  
वी॥ जोबालीलकनिलामोरे। मंकेतपोहो  
न्याचीजोणी॥ जोलावेवकुलामोरे॥ १८६॥ एण॥  
मुकयारिषतमात्रकनेआपुं। पासजिले म  
रकीरी॥ पांचसेटकासुकनेआपे। मुलन  
केरी॥ १८७॥ एण॥ नांलोदेइनेषतमाले  
इत्यांनककोलोरे॥ केसरचंदनमृगमदने

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ॥ २ ॥

तरने दयनातीरे । गोमं गोमनाहर अणकर  
वा । अवेली कहजारीरे ॥ २१ ॥ ऐं ॥ इह  
एक दिन देवे अविधसु । पार  
तनक रुं प्रतिमा तणी । तीरथ अहे हं नग  
॥ २२ ॥ सहणा मां हे सि तने । धल अट वं उजा

ममहिमाद्यः रैः नृतिष्ठयैः । इतिहासिहं यजं  
चादि ॥ २३ ॥ कुम्भलये मतिहं नृवे । कुम्भ  
मुम्भने ज्ञांता । नृकाळीनी कामकर । करतो म  
करि नृकांता ॥ २४ ॥ जाल २ ॥ या समनी रथ  
हरण करे । तां हारण कदम्ब न जोतरे । पारक  
रथी पयांणी करे । इकथ्य न च ठवी जै उतरे  
॥ २५ ॥ बारकी नृनामा जेतले । श्रीं हीमान  
दिनाले तेतले । गीवी मनह विमा नृण्य ५  
कदम्बु वारणं माहुं मरी ॥ २६ ॥ या नृ ७ वी

किमकरुं पश्योऽण॥ छट्कोट्ये रनही दने  
पाहोऽण॥ दिवलयस जिने सरवणुं मंकाहु कि  
मगरथ विष्णुं॥ २७॥ जलविनम्री अंधरह  
स्ये किहं॥ मिलावटी आ किम इहं॥ चिंतउ  
रथयो निडालहे॥ जहराज आवी ने कहै  
॥ २८॥ सुहली उपर नो फ इहं॥ गरथ धूलो ज  
ले जो तिहं॥ स्वस्तिक सी पारी ने ठाँ मि॥ पाह  
णतणी जलट स्ये षोऽण॥ २९॥ श्रीफल अज  
व तिहं छेजू॥ अमृत जल नि अरये छे कुनी



यथाह वानि ॥ ११ ॥ नृपय नो वै नीलो  
पः ॥ प्रणिनीलावटो नीलो वने ॥ कीठयरा  
लो कयमने ॥ तिहं थकी तेनी आं ए ज्यो  
त्यवचवसाहरे मां न ज्यो ॥ १२ ॥ गोठी मन  
रथा पीथो ॥ मितावटेने शुहलो दीयो रो  
ममम ॥ जुं सनं आस ॥ पासतलो मां मे आव  
न ॥ १३ ॥ कपन मां हे मां नुं वै ए ॥ हेमवर  
दे ॥ १४ ॥ गीठी मन मनोरथ यथा ॥ मि  
वटेने गद्याति दवा ॥ १५ ॥ मितावटेने

उजयो। जीसे रं वं शं कं ॥ ५ ॥ धडै छट  
करै कोरणी। लगन जले पाया रोषणी। ॥ ४४ ॥  
धं चर की क्षी प्रतली। नाटक की तक करती।  
वली। रंग प्रेम पर लियामणोरची। जो तां मानव  
नो मनमयी। ॥ ४५ ॥ निपायो। पुरी प्रसाद। स्वर्गि  
अमी बनिमं मेवादा। दीव अवे आरइ मी धर्म्यो  
तत विण देव लउ परचवो। ॥ ४६ ॥ सुनल नेष्ट  
नवेला आर। पयो अनवे वप्पी पर  
मीटी सेर अमांण। एक लमल दग मेहि रो न

२७॥ अथ हस्त... ॥ तत्त्वज्ञानं हि युक्तं  
आं कली॥ योही दण गोतरी नृ... जात कर  
मेधर दोष दो॥ २८॥ हस्त॥ विघ्न विघ्नारण्य  
स करण॥ तिरुने नृ कल स्व रूप॥ पीत क हे  
नृ नृ नृ नृ॥ देवा हे निज रूप॥ २९॥ नील मल  
हे निज रूप॥ नीलोद्य नृ सवार मार गह्वका  
मो नदी॥ वाट देवा वण हार॥ ३०॥ गरुड गो मी प  
य॥ निज नृ दोर रण्य अं नृ र॥ सेव क ने सा निध क  
से॥ आस्था पुरण हार॥ ३१॥ ताल॥ दण अण



३७॥ अथ हनुमन् विष्णु चोत्तरी। लक्ष्मणमां हि सुव  
मां कली। गोतीक्ष्णामोतरी अक्षै। जातकर  
देधरलोयले॥ ३८॥ हनु। विघ्नविनाशक  
सकरमा। जेहनी अकल स्वयं य। पीतक हे  
मनी अं अने। देसाई निज रूप॥ ३९॥ नीलमल  
ये निज प्रया। नीलोय अस्ववार मारग हका  
मां नदी। वाट देखावण हार॥ ४०॥ गरुड गोपीप  
दा निज आदी रण अं नार। सेवक ने सा निधक  
से। आस्था सुरण हार॥ ४१॥ जाल॥ दण्ड अण

रतणलेजोगादि ॥ ३३ ॥ जिहलेहेगापवि  
त्रयइममरेजोजायाखलेअंगलापापसेता  
प॥ ४२ ॥ निरधनियोंनेदेघरभूत। आयेअ  
दुसरीयांनेपुता। कायरनेसूरापणधरीपार  
उत्तारेखलीवरे॥ ४३ ॥ दोनागीनेदेसोनाग  
पगविज्जणानेआवेपावा। वांमनहितीहनेहो  
वांम। मनवंचितघरवेअनिरांम॥ ४४ ॥ जि  
रधस्योनेदेआधरा। नदमायरउतारेधर  
आरतीयांरीआरतजोगधरेध्यांततेलहे

सुरंसा ॥ ६५ ॥ अथ हस्तिकुलं कुरु राज लि  
एते मीने नृपते दिवा जलं बुध ही एते बुध प्र  
काशं पुं ॥ ६६ ॥ ते देवचन रमा ल ॥ ६७ ॥ उषीय  
नेति सुधा वारं ॥ नयनं जन रं जण अ व ता  
र ॥ ते ह न हृदे ये मी त ए ॥ पार्श्व नाथ अ द  
र मी त ए ॥ ६८ ॥ इह ॥ पार्श्व नाथ अ द  
र मी ॥ विष्णु न र वि क र ल ॥ ह स्ति नृ प ह रे ट  
ते ॥ बुध र मि ह मि त ल ॥ ६९ ॥ चो र त ए न य  
ह ल दे ॥ विष य नृ म र उ म क र ॥ विष ध र ना

विमनुजरे। मंग्याने जयकार। श्रीगो गदादि  
डम। दोहगडुरसुलाया परतिश्वरस्त्री पात्रने  
महिमामंत्रजयाय॥५०॥ मंत्रते॥ नैजिहुं  
नैजनुपसमधरी नैजिं श्रीपाश्वन्निक्षरजयं  
ते। नूतनै जेतकीटिंग वितरस्करा। उपश्रमे  
वारदकवी मपुणंते॥५१॥ नै॥ डहनेरी गं श्री  
गं श्री लैदरा जंतरा। ताद एकंतरा दिकतयं  
ते। गर्नबंधण ब्रण मयपन्नं गदिलु विमं च।  
लिका वालिमिवाक मंते॥५२॥ नै॥ संदण



मशणी रेहि सिंयाणी। योट कामी टका डषऊत  
दऊ उंदर सणी कीलनां एांतणी। स्वांन श्री हा  
लविकरा लहंते। उंवे पद्धर एंड पच्चावती अ  
मर श्री हा बसी। वादने घाट अटवी अटंते  
लवामी लुंवे मिले जुजम वेला वसे। सयल अ  
मपा फले मन हसंते। उंवे॥ अष्टमा हा नय ह  
रेकांन पिना टले। उचरे सी लसि सग न एंते  
ददद कर पीत सुं पीत विमल प्रचुं। पाश्र्चि जि  
ननां म अ निरां म मंते। उंवे पध॥ इती अंष्ट ए

॥ अथ श्रीमहावीरजीरोयारणोऽसीत्यते ॥१॥  
डहा ॥ श्रीरिहंतअनेतपुण ॥ अतिअयपरण  
गातामुनिजैगंभीअंजमी ॥ उद्यकहीयेएत्र  
॥१॥ पात्रतलीअनुमोदना ॥ करणीजीरणत्रेव  
आवकउंचीगतलहे ॥ नवरीवेकीहेव ॥२॥ दस  
चीमासावीरजी ॥ विचरतअंजमवाम ॥ विश्वा  
लीप्ररआवीया ॥ इगारमीचोमाय ॥३॥ ढाल  
चोमासीइगारमीजी ॥ विचरतांअंजमरीवे  
आलापुररआवीयाजी ॥ अंजमीअ.म. ॥ १५ ॥

॥ जगतगुरु त्रिसलानंद नजी ॥ १ ॥ जंलै मेने  
व्यालिन राद। नृक्षी सी भिरे वी कपुरा वी आद्य  
मेने जगपु नृक्षी पसुथाय ॥ जग ॥ २ ॥ बलदेव  
नीले छिहुरे जी। तीहं प्रभुका उसा कीध। पत्त  
जोगी चो मग्न नो जी नमो एतप कीध ॥ जग ३  
जिरण सेवसे तिहं जी। पाले आवक धर्मि  
जने तिसल लब्धे जी। जंलै श्री जिन धर्म ॥ जग  
४ ॥ जगज प्रदे उपासीया जी। जिन वर श्री  
चुद्धे न। काल सही प्रभु नि मर्मै जी। अहिय

तदेसुंदान॥ जप॥ ५॥ अदसिवद्रमचिंतवेज  
हीसीसफलमुष्कः सापद्रुमः सगिणलोथ  
कोजीपरीथइयचनुमाप्र॥ जप॥ ६॥ सोम  
यीआहारनीजी॥ जीरणकरतोवादाप्रभुने  
मारगदेषतांजी॥ नीबोधनरनेवार॥ जप॥ ७॥  
घरआवेवेयांकुणालीनेत्याएकजवार॥  
प्रभुजीकुंनहीआवसीजीनेत्यादारेवार  
जप॥ ८॥ पढेकरसुंपारणोजी॥ कुंप्रभुनेप  
मिलानकुवेमनीरथमाहराजी॥ टेनिहवर

[illegible]

राजादिकसङ्गइह रहिजी। धनधनधररखे  
वालेची करणीते करीजी। अदखलहु  
जहेत॥ जपे॥ १४॥ कहोसेतनुमे सुंदीयो  
जी। कीयो पारणीवीर। जोकां प्रतेइम कहै  
जी। मेवहि राइभीर॥ जपे॥ १५॥ जीरणयेत  
सुलेतिहंजी। वाजतहुंहुनिनाद। अंलकी  
यो प्रनु पारणीजी। मनमोथयो विषदाह॥  
जपे॥ १६॥ जेजगमे अनागीयाजी। त्पारेन  
आया म्वांम।

संभवेत्तुल्यलोभः॥ जपे १७॥ जेसा प्रदीप्युमे कीय  
जी॥ लेता रस्युमनमां हि॥ निरधन २ जिम २  
विंछवे जी॥ तीम २ निरफलयाय॥ जपे १८॥  
जेतामतीरस्युमे वन जा जी॥ लेता रस्युमन  
मां ही निरधन जीम २ चित्तवे जी॥ तीम २ निर  
धन २॥ जपे १९॥ म्वांमी कीयो तिहं  
पारणी जी॥ वीणोत्तय विहारान्नायाय  
मंमं लीया जी॥ तिहं मुनी केवलधर  
जप १९॥ वीणा लीधुरनोर जीयो जी॥ वी

कअञ्जन्नागंरु। रायषष्ठापुठे ५ श्रीजी। लुपु  
अचरणपायवंद। जपे २० मेरे नगर मेकी ए  
ठेजी। जीवमन्यजमवंत। कहे केवली न्नाज  
ठेजी। जीरणयेवमहंत। २१ जपे। रायकहे  
। किणकारणेजी। जीरणयेवमहंत। दोनदी  
यो जिणवीरनेजी। एरणयेवमहंत। २२ जपे  
रायप्रतेकहे केवलीजी। एरणदीनी दोन।  
हेमदृष्टिफलतेहनेजी। अचरणकी ५ प्रमं ए  
२३ जपे। देवलीक तिणवारमेजी। जीरण



कलत्रं बंधु॥ जय २४॥ घडी एक सुर डंड  
जां जे न सुणं तो कां न । लहती जीरण तो म  
ही जी । उशंभ केवल ठो म ॥ जय २५ राय जी  
रल ने दीयो जी । अधिक मां न म न मां न । मो  
पुन ग र ने या पीयो जी । जीवी पुन्य प्रमो ल  
ज २६ ॥ दीयो हां न सुपात्र ने जी । ते निरक  
ल न बिहोय । पात्र तणी अहुं मो दना जी । जी  
रत जी म फल होय ॥ २७ जय ॥ इम जो ए अतु

मोदनाजी। दंतदुयात्ररसात्ता। हंतरी। जेनेपा  
त्रनोजी। सीहनेनमेमुनिमाला। ज० २५॥ इली  
श्रीमाहात्रीरजीरोयारणीसंपूर्ण।। अथर  
वनलिष्यते।। रागकेरवो।। चालोरीसयीज  
दरसणकिरियों।। चापेसमव्यरणजिनजि  
केआगे। फुलीफुलवाहकहुबी। पुननं  
यां।। चाणिनटरेनानटणीपुणगादी।। समकन  
वनननपगधरियों।। चापे।। उदंयगद  
ववतावे।। लडकरतनदेतारीयां।। ना

ममकलनुधरउवहीकी। जगजसवासनयो  
जगसरियं॥ च०॥ इतीयदं॥ रागकेरव  
देजोरीजिनंदप्रस्थि॥ जिनंदजगवांन॥ दे०  
मकलनइमेरीआजुकीघडीयो। सकलनये  
नेनांपांण। दे०। सीगअंतापगयीअबमेरी  
पायेनेनिरमलपांन। दे०। किसनगुलाब  
कहेअबकेये। उमराजुलकेराज। दे० इ  
तीयदं॥ रागकेरवो॥ निमजिएंदपरवारी।  
यांहेमेसीनेमजिएं० समुद्वीजेजीरोलामली

अरे प्रेवादेविमाय सरतलगेरु लम .  
ने। दीवां आवां दय। निणे। मिर सो ने को लत्र  
विराजे। गलं मो ती यन की हार। वां या वि .  
रमा सो हे। के अर मे गरण व। निणे।। ती र ए अ  
रथ केरी यो अरे। निर नारे। लं जाय। राजु .  
धि धर शरी। अने अं जन ले सुं नाय। निणे चं  
चं को र सुंदर स्र बजा दय। दन। ती नि म कु मा  
चंद्यु लाव कहै कर गी जी। बर त्या जय र का  
र।। निणे।। इती ने म नाय जी ना स्त व नं।

॥ श्रीगिताय नमः ॥ अथ देवसी प्रति क  
णा विधिः ॥ नमो अरिहंताय ॥ नमो सिद्धाय  
नमो आनंदाय ॥ नमो उवकायाय ॥ नमो  
लोएसद्वसाय ॥ एसी पंचनमुक्ताय ॥ स  
त्पावपणाय ॥ मंगलाय च अक्षयिणी  
युग्मं हृदयं गलं ॥ १ ॥ इच्छामि स्वमास म  
यो ॥ वंदि ॥ जावण जाए ॥ निमिहि आए मच्च  
एण देवमी ॥ १ ॥ इच्छकारि नगव नृपय उ  
करि ॥ इच्छकार नगवन सुहरा ॥ सुहृदेवसी

सुखतपवारीरनिरास्वाध। सुखअंजमजात्रानि  
रखहीलीजी॥ वैश्रज्यसाता॥ नात्रपांणीनीलाज  
देज्जीजी॥ वर्तमानजोग्यं॥ अथसामायक  
लेवानीविद्॥ प्रथमजायगापुंजीजे। पठेवै  
अणीविद्वाइजे। पठेवैअनिवकारशुणीजे  
पठेरवमांसएइंइजे॥ इच्छाकारेणअंदेअ  
हनगवनइरियावहियंयमिकमामी॥ इच्छं  
इच्छामियमिकमिठं। इरियावहियाए। विराहणा  
ए। गमणागमणे। पाएकमणे। बीयकमणे। हरी

यकमले। उस्साउसंग। पणह्ममहीमकीडा  
मंताणासंकमणा। जेमेजिववीराहीया। एगिं  
दिया। वेदिया। तेंदिया। चउरेंदीया। पंचेदिया  
अवीयावसीया। लेसीया। संघाहिया। संघर्ष  
हीया। यराविया। कीलामीया। उद्दीया। म  
णउठाणसंकोमीया। जीवीया। उविवरोविया।  
तस्समिच्छामीडुक्कडं ॥ १॥ तस्सउत्तरीकरणे  
णं। पायुद्धितंकरणेणं। विसीहीकरणेणं।  
विम्वन्नीकरणेणं। पावाणंकम्माणं। णिग्घा

ए।हि।वाए वामीकानुभ्रगं॥अक्षतस्ससी  
एणं॥मिस्ससीएणं।खाससीएणं।ब्वेएणं।जे  
आएणं।उकएणं।वायमिस्सगिणं।नमलिए  
पित्तमुच्चाए।सुज्जमेहिंअंगमंचालेहिं।सुज्ज  
मेहंषेलमंचालेहि।सुज्जमेहिंदिवमंचाले  
हिं।एवमाएहिंआगारेहिं।अवगोअविरा  
हियो।ऊज्जगिंकाउसगि।जावअरिहंटाए  
नगवेताए।नमुक्करिणं।नपारेसी तच्चक  
यं॥वाणेणं॥मीणेणं।काणेणं।अप्पाए



बोसरामी॥ चारुनवकारनोकागससम॥  
लोमससज्जोअग्नि॥ धम्मतिष्ठयरेजीणेअ  
रिहंतेकिशिइयोचउविअपीकेवली॥ १॥ उ  
अंनमज्जिअं चवंदे॥ अंनवममि नंदनंवायु  
मइचमउमध्यहंसुपासं॥ जिणचंदप्यहंवंदे  
॥ २॥ सुवीहंचपुष्पदंतं॥ सिया नसिद्यंस  
वाकं पुण्यच॥ विमलमणंतं च जिणं धम्मं  
रां तिचवंदामि॥ ३॥ ऊं पुं अरिचमद्वि  
वंदे सुणी सुवयं॥ नमिजिणं च वंदामी॥ रिठ

नेमि। पायं तह वदमाणे च। ॥४॥ एवम एअनि  
धुआ। विज्जअरेयमला। यहिणजरमरणा।  
चउवीअं पीजणवरा। तिअयरा मेवसी।  
॥५॥ किस्सिअ वंदिअमहिआ। जिअलीग  
उत्तमाग्निदा। आरेणावीहिलानं। आमा  
वरमुत्तिमंदिनु॥६॥ चंदेयुनिमलयरा। आ  
इचेसूअहियं पायाअं यरा। आगरवरगंजी  
रा। अिदाअिदंममदिअंनु॥७॥ इच्छामीस्व  
मासमणोकही इच्छाकारेणंअंदेयह

वनसामायकलेवासुहयतीपमीलेऊ॥  
मुहगतिदिलिलेहीनेपठे॥ इच्छामिस्वमांस  
मणिकहीइच्छाकारिणसंदेसहजगवन्॥  
आमायकमंदेयाउं॥ इच्छामीवपे॥ इच्छाकापि  
आमायकवाउं॥ पठेएकहाथधरतीराखीजे  
एकहाथमिद्वहयतीमुहमिराखीजे॥ नवकार  
रेउलीजे॥ इच्छामीख॥ इच्छाकारनगवन्प  
सारुकर॥ आमायकदमउचरावोजीपठे॥  
करिमीजंतेआमाहियं॥ सचंसावडीगंपचस्क

मी जावनियमपजवासोमी॥ छविहंतिविहे  
ए॥ मणेए॥ वायाएकाए॥ नकरैमी॥ नकार  
वेमी॥ तस्सजेतेपनिकमामी॥ नंदामीगिरहा  
मीअप्पाए॥ बीसरामी॥ पवै॥ इच्छामीरवणे  
इच्छाकरिणसंदेस्सह॥ विसणीसंदेस्साउ॥ इ  
च्छामिरवणे॥ इच्छाकरिणअंदेस्सहजपत्ते॥ ए  
वउ॥ इच्छामिस्वणे॥ इच्छाकरिणसंणे॥ सका  
यअंदेस्साउ॥ इच्छामिरवणे॥ इच्छाकारेणअंदे  
अहजणे॥ सकायकअ॥ पत्तेतीननवकारउ

पत्तिमुहयति निवेहीते ॥ पत्ते ॥ इच्छा मिश्रमा  
श्रमणोदंहेउं । इन्द्राय उवाच । निमिहिञ्चाए  
अहंजाणामेहिउगहं निमहीअह । काय  
कायमंकायं । स्वामणिशो । नेकिलामी । अ  
पकिलंताणं । वज्रशुनेणने । दिवसीवइ  
कंती । जज्ञाने । उवणी । उंचंने । स्वामेमिस्व  
मासमणी । देवसीयंवइकमं । आवसिअ  
ए । पत्तिकमाजी । ॥ स्वमासणाणं ॥ देवसी  
याए । आसासणाए । शिंशियन्नयराए ।



हंसी न्याहारे न्यास पाणं साइमं साइमं ।  
नान्न न्यासो गेयं सहस्रगारेणं महत्त  
गारेणं सत्वं समाहित्वा तीयागारेणं वीसरा  
मि ॥ इती समाय कलेवानी विधु कहि ॥  
अथाये देवसी यमिक मणानी वीधु ॥ इ  
च्छामी त्वं । इच्छा करेण संदेसहन गवनत्वे  
त्यवंदन कर्तुं । धुरमम संश्री न्यादि देव  
विमला चलमं मणाना नराय कल के अरी  
मरु देवानं दण ॥ ११ ॥ गिरनार गिरुत वां द

यस्यो ए। स्वांमी ते मङ्गलम् । लालयामि च । त्रि ।  
लियो । तारीशक्तलनार । २ । त्वां जगवासी  
जिणंददेव । महिमा मे सुतो । गोप्ती हेमी लङ्क  
ये । मजे मनखंतो । ३ । चक्रवर्तिपदवीत  
जी । लीक्षेयं जमनार । शोतिजिणे श्वरमो  
लमो । नितश्चक्रं जहारा । ४ । षोचे तीरथ  
जे नमै । प्रहउ वीनरनारि । कमलविलयक  
विष्मक छे । तस्स घरजयश्चकार । ५ । जिं  
चिं नाम तिष्ठे । संगे यया ले मां ए सली ए



जाइजिण विंवाइ॥ ताइस जायवंदापि  
पुसुसुयो॥ न्प्रहिंतालो॥ नयवंतालो॥ न्प्राइय  
साणं॥ विज्ञायराणं॥ न्प्रयं॥ न्प्रबुद्धाणं॥ पुरसुत  
माणं॥ पुरसंसीन्नाणं॥ पुरसुवरपुंफरीयाणं  
लीगुत्तमाणं॥ लीगनहाणं॥ लीगहिन्नाणं  
लीगपुइवाणं॥ लीगपुछीयगराणं॥ न्प्रज्य  
दायणं॥ चसुदयणं॥ मगदयाणं॥ अरणदा  
याणं॥ बीहीदयाणं॥ धम्मदयाणं॥ धम्मदिया  
न्नाणं॥ धम्मनायगाणं॥ धम्मसारहीणं॥ ध



अरिहंतसेइहाएकरेमीकाउअगं॥वंह  
एवसियाए॥इअएवतीयाएअकारव  
सियाएअमंएवसिआए॥निरुवअगव  
सियाए॥मिदाए॥महिआए॥धीएद्वरणए  
अएपीआए॥वहमंणीए॥वामीकाउअ  
गं॥अननचुसीएएंकही॥१नचकार  
नीकाउसगकीजेपवेयुइकहवी॥न  
मोअरहतमिदाचार्येपाध्यायसर्वआध  
न्य॥आगेएरववारनिमंए॥आहजिलेस

रन्नायाजी। सैबुजेलाज्जलनेलीलोए।। १०॥ १॥  
हनापायाजी। जगन्नेभवजगता रिमएमिः  
दीठांछरगतबबिजी। जात्राकरीमैनी। ११॥  
जीपाले। कारजतेहनासरिजी।। १२॥ १॥  
गस्सकही।। सच्चलीएन्नरिहंतचेदयाणें  
रिमीकोउसगों। वनगवलीयाएकही। १३॥  
बुठय्ययीएणेंकही। ननुकारनाकालुश  
कीजे।। यत्तेबीजीशूद्रकहीजे।। श्रीश्री  
डीगिरयष्टापदुजलनन्तरुदय्यादिजी।।

दीख्येताही। १२॥ अथ नारायणोक्तं ॥  
दिष्टेष्टद्वंद्वं हीजे ॥ श्रीमिंदरजिनसुरप  
तिआमलमिंदुजमहिमादष्ट्येजी ॥ वंदी  
अन्नागममणधरपुंष्ट्ये ॥ धनएतीरथना  
ष्ट्येजी ॥ वंदिद्वन्नागममणधरपुंष्ट्ये ॥  
धनएतीरथनाष्ट्येजी ॥ मिद्वन्ननंशा  
णभिरल्लवा ॥ धनआगममणधरपुंष्ट्येजी ॥  
कलतीरथनेष्टमिंदुजमहिमादष्ट्येजी ॥ नंदकी  
मैद्वजतीलेजी ॥ १३ ॥ पठेद्विद्वं पुत्रु

पुं। धारगयाणोपरंवरणद्वयं। जीममोदयग-  
 णं नमोसयासक्षसिद्धाणं॥ एजीदिताणो  
 विदेवी। जंदेवापेजलीनमंभेती। सोदेमंद  
 वमहिमं। निरन्मात्रेदेमाह्वनीरे॥ ११॥ द-  
 कोविणनमुकारो। जिणवरसाहस्रगद्ग-  
 माणस्स। संसारमागरातीहारेद्वन-  
 रवा॥ १२॥ उजंतयेलविहरे। दिग्गान्वा-  
 नियहीआजयातंभाषमन्त्रक : : : : :  
 णीनेमीनमंसांमी॥ १३॥ चत्तारी-

यन्नेष्टि॥ जिणकराचउवीशे॥ परमहनि  
अष्टा॥ सिद्धासिद्धंममदिसंहु॥ ५॥ वैयाव  
मराणे॥ त्रोंतिगराणं॥ समदिवीअमाही  
राणं॥ करेमीकाउअगं॥ अच्चउस्ससिए  
कही॥ १॥ नवकारनोकाउअगकीजे॥ १॥  
वेष्टुइकहवी॥ गोमुखजद्धजकीसरी  
वी॥ शेंहुजेसानिधकारीजी॥ सकलमनी  
यसंधनपुरे॥ वंछितसमकिदधारीजी  
वेमलाचजुंजगजयवंती॥ सगलीसग

तच्चमारीती। दिज्जो दिवा उमपात्तुपेत्ति। न  
रज्जिद्वहमारानी॥४॥ नमोऽन्नं तादी  
जे सवेति वेणवदामीतां॥५॥ ये ते दृष्टा म  
यप नगवानाहुं॥६॥ दृष्टा मीरवपि उपाध्यानाहुं॥७॥ दृष्टा मीरवपि  
मस्तयाधुज्जां नैत्रीना लल्लं दृष्टा॥८॥ दृष्टा मीरव  
पि विठे साधुसाधुली॥९॥ नमोऽन्नं तादी  
तुरविध संघनगदो नमोऽन्नं तादी॥१०॥  
धमारगचाली॥ तिष्ठो नमो॥ एवमेव नमो॥



रत्निका। न संदृष्टुं हे ज्यो॥ इच्छामी स्वर्ग। इ  
 चाकारेण संदिश्य ह न ग व द्। देवसी य म्नि  
 क म्पणे ता नुं। पुरु कहि वा विह। इच्छं स द्ध स  
 विह देवसी य। उ चिं तिय। उ प्रा सी य। उ।  
 चि ती य। इच्छा कारेण संदे स। इच्छं त स्य  
 निष्ठा मि दु क्त मं॥ पत्नै करे मी नं ते सा मा ही  
 यं क ही जे॥ पत्नै॥ इच्छामी ठा मी का नु स गे  
 जो मे देव सी यो अ इ यारो क नु। का इ नु। वा  
 इ नु। मां ए स्सी नु। उ स तो। उ म गो। न्न क प्यो

अकलिज्यो। डजाउ। डचिलो। नृशं। जोशे।  
ए। छियुवो। असवण्यावगी। नां। लेदं। प्रले।  
चरित्ताचरित्ते। सुएसुमाहिए। तिहं। गुली  
ए। चउन्हं। कसायाए। पचए। महुवया।  
तिहं। गुणवयाए। चउए। सिमवयाए।  
सविहससावगधमस्स। जं। थं। नीं। अं। जं। दि  
रहं। अं। तस्स। मिळामी। डुक्कडं। पळे। त  
सरी। करणे। एं। कही। अनअउस्स॥ पळे  
आठनवकारनी। काउसग। की। जै॥

यथेति शिवाय नमः कही ॥ इच्छा करिण संहनन गवन् ॥ मुहय हि  
 कही ॥ इच्छा करिण संहनन गवन् ॥ मुहय हि  
 एनी लेजा ॥ मुहय शिवाय लेहीने ॥ दोय सोम  
 पाही ले ॥ यथे इच्छा करिण संहनन गवन्  
 देवसीयं न्ना लोउं ॥ इच्छं न्ना लोएम ॥ जीमे दे  
 वसीउं न्ना इत्यारो कउं कही ले ॥ यथे इच्छा क  
 रेण संहनन ॥ नगं वा नगमणमणमणे न्ना  
 लोउं जी ॥ सातलाष पृथ्वी काय ॥ सातला  
 ष न्नाप्य काय ॥ सातलाष ते उ काय ॥ सात

लक्ष्मणकाय। अथ लक्ष्मणकाय  
काय। चवदेलासुस। क्षरणवजस्यतीकाय  
वेलासुवेडी। वेलासुतेडी। आरलाषदेव  
ता। आरलाषनारकी। आरलाषतिथेच  
येचेडी। चवदेलासुसुव्यनीजाताएवंका

इजीवहणोहियाहणहियाहणतीप्रते  
नलोजाह्योहियाहिसविक्रम  
याइकरी॥ तस्समिन्नामीडुकमं॥

आद्यानिपतः प्रथमावाहः अष्टादशोऽनंशः  
नेष्टुनमादित्यः १३। क्रीडः १४। मंत्रः १५। मायाः १६।  
लोचनः १७। रागः १८। दिवः १९। कलहः २०। अन्त्याः २१।  
नः २२। पितृपुत्रः २३। रतिः २४। अरतिः २५। परिवर्ति  
वाहः २६। मायामीसो २७। मिष्टातसत्य  
२८। एवं अवारिपापस्थानसेवाकुर्वे। मे  
वायाकुर्वे। मेवतांप्रति अमुमीदीयाकु  
र्वे। तिस्रविंशतमवचनकायाइंकरी  
तस्मिन्निब्रामीडुकम् ॥ इच्छेसवसवीय



वा. या. ति. क. त. वि. या. वा. ह. श. अ. ह. ता. हो. न. श. ॥  
मे. यु. वा. ध. दि. वि. ॥ श्री. ध. ड. म. न. ॥ मा. या. ८  
ली. न. ॥ रा. म. १०. दि. व. ११. क. ल. ह. १२. अ. म्. वा.  
न. १३. पे. यु. न्. १४. र. ति. अ. र. ति. १५. प. रि. प. रि.  
वा. ह. १६. मा. या. मी. सो. १७. मि. ष्ठा. त. स. ल्प.  
१८. ए. वं. अ. व. रि. पा. प. स्थो. न. से. त्या. ऊ. वे. मे.  
वा. या. ऊ. वे. मे. व. तां. प्र. ते. अ. नु. मो. दी. या. ऊ.  
वे. ॥ ते. स. वि. ऊ. म. न. व. च. न. का. या. इ. क. १.  
त. स. मि. त्वा. मी. दु. क. म्. ॥ इ. च्छं. स. व. स. वी. य.

देवसीय । एहि तिया । हुकु तिया । एहि मया ।

। एक नव कर धर कहिने ॥ पिढी ॥

। पिढी वंदे उ कहिजे ॥ वंदे

विधि

मकम ॥ आवग धम्मा इत्यारम्भ ॥

वावय्य रत्ना तनदिते च गिरहमी ॥ २



सहस्रनामस्तुतिः। गोपबन्धुदेवदत्तदेहेन्द्र  
वीर्यं वयस्सम्प्रदायि॥१२॥ पुनर्वीर्यं तद्भवे  
नृपुत्रायमी। सुलग्नपरिवृतहरणविरड्  
यो॥ नृपुत्रिय इत्यपि॥१३॥ तेनाहम्  
अनुने। लक्ष्मीरुदे विरुधगमणि। ऊरुतीले  
ऊरुभाषि॥१४॥ चउद्यै अणुवायामी  
निचंपतराममणविरड्डु॥ नृपुत्रिय इत्यपि॥  
१५॥ नृपुत्रियहिताइतर। अलंगविवाली  
व अणुरागी। चउद्यै वयस्सम्प्रदायि॥ पर्व

इतीन्द्राण्येवमेसीपद्ममेसी। १७। इतिन्द्राण्येवमेसी  
 अष्टमेसी वक्ष्यमाणपरिहारे। इतिन्द्राण्येवमेसी  
 १७। अणधनद्वितवस्तु। अणधनद्वितवस्तु  
 वयपरिमाणे दुष्पएचउष्पयंसी॥ १८॥  
 १८॥ गम्भणस्सयपरिमाणे। दिशालुउठंन्  
 हेयतिरियंचाबुठअन्तरठा। पदमासीपु।  
 एवएनिंदे। १९॥ मष्टमेसीयमंसंमिय। पुष्के।  
 फलेयमंधमलेय। उवन्नेनेपरन्नेगी। वीयंम  
 पुणवएनिंदे। २०॥ सतिहीएडिबुदे। अण्णोव

डुपीलेव न्याहरी। बुद्धी अहीन मणया। १५। म  
इंगाली वारसा की। जानी फोडी मवजये कम  
वाणं जंजेव। संतल प्ररय के सविम विमयों ऐ  
वंसु जंत पिछ संजमों। निलेखणं च दवी दणं  
रद हत लाव नीयं। अद्रपी संज वजिया। २२  
अब्ज गुरु मल जंतु गल कंठे। मंत मुले ने अद्यै  
हं ने देवा विष्टा। २४। पणै। नृण वदण वन  
गविले वण मद्रु वरय गंधे। वच्चा मणै आ  
नरलें। २५। पणै। कंद ये ऊक दूये। मो हरि अ

हीगरणजीगेअइरसो। पंरमीअणुंवाए। तयैम  
पुणवरनिंदे। २५। लि विहेइयणीहाले। अणव  
वाले। तायदिऊं। आमाइयं विलकहए। पठने  
आवावएनिंदे। २७। अणवले। येसवले। अदेस  
वेपुगलावेवे। देसा। अणवली। बी। एसी। वाव  
एनिंदे। २८। अलेस। अलेस। अलेस। अलेस। अलेस।  
संथारुचारविहे। पं। अलेस। अलेस। अलेस। अलेस।  
पोसहवीवरीए। तद्वहसी। अलेस। अलेस।  
अनिहे। अलेस। अलेस। अलेस। अलेस।

लाभकमसंती। ननु हि विदुः यत्तु विदुः ॥ ३० ॥ स हि  
सह हि एतत्। जंमि अने ज एतत्। अणु कं पारा  
एतत् दोस एतत् तं निदिदि ॥ ३१ ॥ सा ऊ स संविना  
गी। न क वी त व चरण करण जु ते सु अं ते मी  
तु एते। तं निदि तं च ॥ ३२ ॥ इह ली ए पर ली ए  
जि वी न्य मरु ए आस स प्त मी। पंच विही अइय  
री। मा म अं ऊ ज मर एं ते ॥ ३३ ॥ का इ एं काय स  
प नि क मे वा इ अ स वा या ए। म ए स मा ए स  
अ स। स व स व या अ इ वा र स ॥ ३४ ॥ वे द ए व

एसी भागां रंवेद्युं न मा ज क रं सा द्यं मे नि सु । गुं लि सु  
 अस न र स । जी अ इ चो र ते नि हे । वं पं । सं म ति  
 वि जि तो । ज इ दि ऊ या वं स मा इ रं किं चिं । अ पी  
 सि ले इ बंधी । जे णे न नि दं थ अ ऊ ण इ ॥ ३५ ॥  
 तं पि ऊ अ थ नि क म णं । अ प्प री या वं रा उ ल र  
 गु णं च । वि पं उ व सा मी । वा इ व सु शि ब नु धी ज  
 उं । ज ह वि अं ऊ त ग यं । मे त मु ल वि आ श्रि या ।  
 दि द्यां हं णं त मं ते हि । ती त हं नि वि श्रं । ३६ ॥ ए वं  
 अ ठ वि हं क मं । रा ग ही य अं म जि यं । अं लो यं

ते निहंती। जीवंहृत्तस्स सावर्तः॥३२॥ कथपावी  
विमलः स्तो। आलोदयदंष्ट्रियगुरुमंथाश्री।  
होइअइरिगलज्जवी। उंहरीनरुत्तजारवही।४०॥  
आवस्सएणएण। सावर्तजइविवज्जरेहोइ  
उरवाणंमंतकिरियं। काहिअचिरिणकाले  
ण।४१॥ आलोयणावज्जविह। नयअनरी  
यापिक्कमणकाले। मूलगुणउत्तरगुणे। त  
नदेत्तंचपि।४२॥ तस्सधम्मस्सकेवलीयनत्त  
स्स। अनुवीउंसीआराहणाए। वीरोमीवीरा

हृणार । तिविहृणयुक्तिजंते । दंष्ट्रमंति ले  
चउदीये ॥ ४३ ॥ जालेंती विद्वत्प्राप्त उद्वेगुदे  
यतिरियली एयासवद्वत्तादवंदे इहमंते  
तन्ममंतर् ॥ ४४ ॥ जालेंदिके विद्याका । नर  
हिरवयविदिहे । सद्येसीतेसिपुणो इहिवीहे  
णतीदं वीरीयाणं ॥ ४५ ॥ चीरसेचीन्म  
यावपणासणीया । नवसहसमहणीन्म । चउ  
विम्रजिणवणगीकहा । दीलेंउमेदियहा ॥  
४६ ॥ ममा मंगलजरहंता । सिद्धासा । जसुहंच



धम्मोऽयं । सम्मदिविदेवा । उ उ अमा इ च बी हं  
च । ४७ ॥ पमि सिद्ध ण करणेणं । किं चाणम ।  
करणेणं । पमि कम्म णं असद्दा हणे तह । वि  
वल्लभपदवणाए ॥ ४८ ॥ खामेमी सवे जी वे  
अवे जिवा स्व मंडु मे । मि ति मे स व नू ए स वि  
रम स न के ण इ ॥ ४९ ॥ एवं म हं जी लो इ य । नं ध  
य न रहिय उ गं छियं अ मं । ति वि हे ण त प मि  
कं ती ॥ वं द मी जि णे च न वी यं ॥ ५० ॥ पं ठे ।  
दो य स्वां म णा धी जे ॥ इ च्छा कारे ण सें दे स

हजगवन् अंशु विउहं अंशेतर देवसीयं  
खामे मि॥ इच्छं खामे मि देवसीयं॥ जंकिं  
अं॥ अप्यतिथं॥ परपुलि अं॥ नहे पाले॥ व॥  
वेयावचे॥ आलावे अं॥ लादे उचा अणे॥ सम  
अणे॥ अंतरासा ए उदरी जा आ ए डं॥  
म अ वि ए या॥ प॥  
उ ज्ञे जा ए ह॥ अ ह न या ए म॥  
ड क डं॥ प ले दी य खां म ए ण दी जे॥  
उ का ये॥

ज्ञाया। सबेहि कीहेण बामेमी। अवंसससम।  
एअंघस्स। नंगवउं अंजली करीसीसे। सवं।  
अमावइला। अमामीसवसअहियंपी २ सवस  
जीवरासिस। नावउं धम्मो नहीन चिती। अवं  
अमावइला। अमामीसवसअहियंपी। ३  
॥ इच्छं करेमी नुं ते सामा इयं कहि ॥ इच्छांमी  
वामिकाउसगी। जीमे देवसी योअइयारीक  
उं कहिजे। तस्सउत्तरी करणेणं कहि। आ  
वत्तवकारनी काउअण्णं काजे ॥ पढे लीगस्स

कही। सखी रत्न सिंह नये दयालु। करे मी।

। पक्षे पुकर वर दी व ठेक ही जे

अनखु सुख सीए

सुयदेवीया

। अमल सुख सीए

वधेन।

रनीकाउपगकीजे॥ पढेनमोअरत्नसिद्धा  
येपिअयसर्वसाधन्यसुखदेवीयाभ्यनगव  
इप्ताणावरणीहिकम्मसंघायंजेसीकमैउव  
हो॥जेसंस्तसायरेनति॥१॥ शिवसिद्धिदेवीया  
यकरेमीकाउमगंअनन्तउससीएणंकण॥२॥  
नवकारनीकाउमगकीजे॥ नमोअहंसिद्धा  
चायेपिअयसर्वसाधन्यसुखदेवीयाभ्यनगव  
तुसाधनीसाधतेक्रीयासाधित्रदेवतानित्यं  
न्यूनस्तुल्यदायनी॥३॥ नवकार१प्रगटु

णी इक्षामीक्षमासमणीकरी। इक्ष्वाकरिण्यं दि  
स्सहजगवन्नामैगर्वाकस्महयंतियमिदं। प  
क्षेत्तदाऽत्रावसगनीमुह्यतिपदिलेहीये ॥  
पक्षेदीयस्वोमणादीजे। पक्षे इक्षामीक्ष्मण्यं  
यं। नमो रकमासमाणाणं। नमो हतशिखाचायेपि  
धाय सर्वश्रुधुन्ना ॥ नमो स्तुतवर्धमानाय यमद  
नां मायकर्मणा। तजया वासमीक्ष्माय परोक्ष  
यक्तुतिथिना ॥ १ ॥ येषां विकचारविदराज्या  
ज्यायक्रमकमलावली। दधत्पाशद्वयेरिति दं

गतं। प्रज्ञासंकथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्र॥२॥  
कथयिताय हि जंतुनि वृत्तिं करीतायी जे  
नमस्तुभ्यं बुद्धीमता। अशुक्रमासीन्न वदंती  
अनिनी॥६॥ उतुष्टमय विस्तरे गिरं॥३॥ न  
मोक्षं कही॥ इच्छामी खमासमणी कही॥ इ  
च्छाकरिणं देअ ह न ग व न्। स्तवनं न लु स्त  
वनं न लु। नीमं ह त मि द्वा चा ये पि ध्मा य अ  
र्वसा ध्मं॥ स्तवनं॥ शितल जिन वर अ हि  
जं सुरंग॥ उमद र स ए थि दि ल चं गा ही॥ अमु

जी नरजसकणीजे मोरी ॥ नरजणे ॥ कुतो  
चाऊं रसेवा तोरी हो प्रणे ॥ १ ॥ अमुम हिरकर  
जे जोरु ॥ मोरी दील मोलागे तो सुं हो ॥ ५० ॥  
० २ ॥ अजमूर विमोहनगारी ॥ अजमूर तरी न  
ली हारी हो ॥ प्रणे ॥ नम्रणे ॥ ३ ॥ जिन वांणी डधमूर  
॥ जिमळ ऊमुळ पीतियरणी हो ॥ प्रणे ॥ नम्र ० ध  
जिमं चंद चिकारी नेहा ॥ जिहडर नेवली मेहा हो  
प्रणे ॥ ५ ॥ नम्रणे ॥ अंतारक निचुवन ताता ॥ मुर  
नरनारी गुण गाता हो ॥ ५० ॥ ५५ ॥



दक्षणाकाजे। सुजन्मयोचं त्वितराजेही। प्रपन्न  
उदया पुरमें अमिक विराजे। तिहांशी तल नि  
नवरत्नाजेही। प्रपन्न तपगत्वपतिते जन्म  
वाया॥ श्री विजयकृमा स्मरिरायाही। प्रपन्न  
॥ २॥ वृद्धमंदरं कर्मलगुकराया॥ शिशु  
बुद्धिकर्मलगुणगायाही। प्रपन्न। प्रपन्न। स्त  
वनकही इच्छंवरकलंगमं विद्म। मारग्य  
एव निव्यं विगयमीहं। अक्षरीमयं जिलाणं  
अवमरस्यं वंदे॥ १॥ इच्छामी पन्नगवांना

हं। इच्छामीषं नृणां च यः। इच्छामि स्वयं तपः  
ध्याये। इच्छामीषं समस्तसाधुनेत्रिका। लव्वं ह  
नामा वीहाय धरतीयेटेकी। अत्रा इजेस्वादीव  
अमुद्देस्वा। पनरयक मनुमीसुं। जावंति केवि  
आऊरयणहरणगुथपनिगहक्षरा। पंचमा  
हावयक्षरा। अत्रास्त्रिहस्सलीलंगक्षरा। ए  
षु अत्रास्त्रिहस्सलीलंगक्षरा। ए  
एणवंदामि। इमकहीपच्छेइच्छंदेदसीदयाय  
चितं करेसिकाउसगं। अन्नथउत्सलीएण

कही। चार लो ग स स अथवा मो ले न व कार नो  
का उ स ग की जे । प छे लो ग स स क ही । इ च्छा मी  
स्व मा स म लो । इ च्छा करिण अं दे स ह नं ग व न्  
अ जा य क र्छे । इ म क ही । न व का र पु णी प छे ।  
अ जा य क ह ली । श्री जा य क ही नै न व का र पु  
णी जे । प छे इ च्छं ड स्व ख य र क म र क य त्रि मि त्त  
करे श्री का उ अ ग्गं । प छे अ न न च्छ उ स सी ये णं क ही  
ओ ले न व का र । अथवा चार लो ग स स नो का उ  
अ ग्ग की जे ॥ प छे न मो ऽ ह त त्रि द्वा चा यो पा

ध्याय सर्वसाधकम् । श्रांतिश्रांतिनिश्चितं  
 शोक्तिश्रांत्यशिवेनमस्तुस्तोत्रश्रांतिनिश्चितं  
 संमंत्रपदेशांतयेस्तोत्रि ॥ १॥ ॐ मतिनिश्चितं  
 वचनमोन्नतगवतेऽर्हतेऽर्जुनश्रांतिज  
 नायजयवते । असस्वीनेस्वांमीनेदजीनां  
 जातीमैत्रकमहोमं पतिममनित्वाय  
 यात्रेजीक्यपजिताय चानमोनमश्रांतिदि  
 य ॥ १॥ अर्चामिरमुमस्तु  
 तायनिजताय । जुवनजनपालनोदयत ।

यत्तु तितो न पृथक् स्मे ॥ ४ ॥ सर्वडरी ती घन ॥  
स न । कराय । सर्वशिव प्रज्ञान मनाय ॥ ५ ॥  
गृह भूत पिशाच । सा कनीनां प्रमथ नाय  
॥ ५ ॥ य म्ये ति नाम मंत्र । प्रधान च क्यो पय्ये  
ग द्द त ती मा । विजया ऊरु ते जन हित । मि  
ती च्छु ज्ञान म त तं शं ति । ६ ॥ न व तु न म स्ते  
न ग व ती । विजये स्र ज ये प रा य रे ज्ज ते ।  
अ प रा जिते ज ग त्पां । ज य ती ती ज या व ह  
न व ती ॥ ७ ॥ सर्व म्या पि च मं घ म्य । न र

कल्याणमंगलं प्रदेसाधकानो वमदा क्रिच ।  
उद्विषष्टीप्रदेजीया ॥ ८ ॥ नव्यानां कृतसि  
द्धि निवृत्तिनिर्वाणजनसत्त्वानं अभयप्रध  
ननिरत्नानमीस्कस्वस्तिप्रदेउभं ॥ ९ ॥ नक्त  
नां जंशनां शुभावाहेनित्यमद्यते देवी अम्प  
दृष्टिनां च । इतिरतिप्रतिबुद्धिप्रधनाय ॥ १० ॥  
जितसासननिरतानां त्रांतिनतानां च जगति  
जनतानां श्रीशंयतिकिर्त्तियशोवर्ध  
त्यदेवी वीजयस्व ॥



॥१५॥ इति प्रसिद्धिः निमिषात् ॥ १५ ॥  
स्त्ववशो दीः प्रालिखानि दत्ता निवृत्ता विना मोक्ष  
दिकरश्च जन्मि ॥ १६ ॥ इति प्रसिद्धिः निमिषात्  
अहो ॥ १७ ॥ इति प्रसिद्धिः निमिषात् ॥ १७ ॥  
अही प्रसिद्धिः निमिषात् ॥ १८ ॥ इति प्रसिद्धिः निमिषात्  
॥ १९ ॥ इति प्रसिद्धिः निमिषात् ॥ १९ ॥  
आमनयश्च नमो मिमांसा ॥ २० ॥ इति प्रसिद्धिः निमिषात्  
ध्यायमानं निमिषात् ॥ २१ ॥ इति प्रसिद्धिः निमिषात्  
उत्तमं सर्वं कथा ॥ २२ ॥ इति प्रसिद्धिः निमिषात्



जेपं जेत्पराशानं ॥६॥ इतीदेवसी प्रति  
क्रमणानि विधिः ॥ अथ सामायकप्य  
रवानी विधत्ती ॥ अथ मद्रियावही कही  
चारनवकारनी कारुसग कीजे ॥ पठेयग  
हलीगस कही ॥ पठेइवामी अमासणी क  
ही ॥ इच्छाकारेण अंदेअहनगवन्चैत्पवंद  
नकश्ने ॥ चउक्कसायमिमलमूरण ॥ उजय  
मणवांणमसमूरण ॥ सरसंयीणं पुवन्न ॥  
गयगामीय ॥ जयीपाअन्नवणतयसामि

प्र॥ १॥ डसतण्कं तिय कण्ठि सणिद्धे ॥ ओ  
इद्र फण मणी कीरण लुद्धे ॥ नुन वज लह  
सं मिल यत्वं बी ॥ ओ नि ए पा स पय च्च वं  
चे ॥ २ ॥ निस्स ही न मी च्छु णं क ही ॥ इच्छा मी णि  
इच्छा करि ॥ सामाय क पार वा मुह प ति प डि  
जे ॥ इ म क ही म्मु ह प ति प रु ले ही ये ॥ इच्छा क  
रे ॥ न ग व न सा मा य क पा रु ॥ इच्छा का ण सा  
मा य ल पार वा ना व ना गा थ न्नु ॥ न व का  
र गु णी जे ॥ गा थ ॥ सा मा य क च्च य जु च्छो ॥ जा

वसुणी होइ नियम अंजुत्तो ॥ विनइ अस्स हं कम्म  
सामाइयं जुति या वारा ॥ ९ ॥ सामाइयं मुत्ति  
आवा स मणो इव सा वरु होइ ज म्हा ॥ ए ए ए ॥  
कारणे ए ॥ वज्ज सी समाइयं ऊया ॥ सामा  
य विधइ ली धी ॥ विधे पास्यो ॥ विधे कर तां अ  
वध आसा तना लागी होय ॥ १० मनरा १० व  
नरा ११ कायारा ॥ वत्ती स हो मण मध्ये जी को  
इह पण लागी होय ॥ ते अ विज्जं मन वचन का  
या इ करी तस्स मिच्छे ॥ ती न्न वकार गुणी क  
य माये हरी जे ॥ इती देवरी इति क्रमणा सामा

॥ अथ श्री भैरुजांजीरास लिख्यते ॥ ७ ॥  
त्रिरिमहेश्वरपावनमिच्छांणीमनन्तांणंदार  
भनणुरलियादणुं भैरुजनीसक्यकंदार ॥ ३३ ॥  
त्रचारभतीतरे ॥ ऊर्ध्वधनेमरभुरातिष्ठंभेसु  
जमातमकिये ॥ द्वीजादित्यहंभुरा ॥ ३४ ॥ वीरवि  
णंदममीसस्याभैरुजउपरजेमाइसादिवत्ता  
गलकदो ॥ भैरुजमातमएमा ॥ ३५ ॥ भैरुजतिरम्य  
मारवी ॥ नहिबैतीरथकीयास्वर्गमि  
दिहिरथमगलाजोय ॥ ३६ ॥ नांमेनवि



[illegible]

सर्वनिर्माणां हरे ॥ से ॥ ३ ॥ नरत्तपुत्रचैत्री  
नमदीन ॥ इणयेवुजगिरआइरे ॥ पांचकीमि  
दुं पुं हरिक सिद्धा ॥ तिणपुं हरी क कह इरे ॥ ४ ॥  
॥ से ॥ नमि विनमी राज विद्या धर वै वै को  
अंघातरे ॥ काणुण सुद दसमी दीन सिद्धा ॥ ति  
णप्रणमुं परातरे ॥ ५ ॥ से ॥ चैत्र माय वदिच  
उदसनेदिन ॥ नमी पुत्र वरु अतरे ॥ अलक्षण  
कर येवु जे गिरुं पर ॥ एअऊ सिद्धा एकठरे  
॥ ६ ॥ से ॥ पीतरा प्रथम तिर्थ कर केरु ॥ डाक

नेवतिस्त्रिंशंकातिसूदिक्षुमने सिद्धा। द्वा  
कीमिष्टुनिसं सलरे॥७॥ सेणपांचेपांसवद  
गिरमिद्धा। नवनारिदंरिषरायरे। नंबवधजु  
नगयाइहोमुक्ते। न्नादेकमविपाचरे॥८॥ सेण  
। नेमविनातेवीअतिथंकराअमोअस्यागि  
रिष्टंगरे। न्नजितशोतितीथंकरवेउ। रस  
चोमाओरंगरे॥ सेवे॥ अहस्यआधुपरवाल  
मंघाते। थावचाशुतआधरे।  
श्लेखमुनीवर।



॥सेपे॥ नमः शिवाय ॥ तापुनिमैतु जेसिद्धा नरतेम  
रनीयादिरे । रंमन्यनेमरतादिकभीदा मुग  
सितलीएवाहरे ॥सेप १५॥ जालिमयावीनिउ  
वयाली ॥ अमुषसः धनीकोमिरे । साधुअनेत  
मैतुजसिद्धा ॥ प्रणमुवेकरजोमिरे ॥ १२ ॥ सेपे  
॥ ७७ ॥ सैतुजानाकजसीलुधारातेसकल  
जोसजको ॥ सुविचार । सणतांआणदज्जग  
नमायाजनमजनमनापातिकजाय ॥ १॥ क्रम  
नदेवज्जोधापुरी ॥ समवसल्यासांभीहीत

करी। नरतगयोवां हणने करुण। एउपदेवादी  
यो जिनराज॥ २॥ जगमां हिमोटी अरिहंतदे  
व। चउअवइंदकरेजसुमेव। तेहसीमोटी  
अंधकहायाजेहनेपणमें जिनवरराय। ३॥  
तेहसीमोटीअंधवीकयो। नरतफणीनेघन  
गहगसो। नरतकहेतेकिमपांमीये। प्रचकहे  
मेजुजजात्राकीये॥ ४॥ नरतकहेअंधवीप  
दसुज। तेआयोऊंअंगजजुऊ। इडेअंगया  
अकृतवाअ। प्रचुआपेअंधवीपदलाअ॥

॥५॥ इदं लिखितं न तत्कालं न तत्कालं न तत्कालं ।  
विष्णुं नमस्कृत्य नमस्कृत्य नमस्कृत्य नमस्कृत्य ।  
रक्षोनाशकं रक्षोनाशकं रक्षोनाशकं रक्षोनाशकं ।  
वर्णप्रतिमावती रत्नतली दिधीमनरती  
नरतेगणधरतेमीया । वांतिकपुष्टकम्  
जन्मकीया ॥७॥ कंकीत्री मुकी मज्जदे  
य । नरततेमायो मंघनम्रेय । न्यायो मं  
घनमजीधमापुरी । वधमथकीरथजात्राक  
री ॥८॥ मंघनचत्तिकीधी न्यालिखणी मंघ

चलाये भैरव जानणी ॥ १० ॥ अरु बल बल के  
वली ॥ मुनिवर की हिया धैरिया वली ॥ ११ ॥  
चक्रवर्त्तनी मगली रुद्र ॥ नर ते आ धैर्य की दी  
मिदि ॥ हय गयरथ पायक पुरवार ॥ ते लो  
क हता ना वै पार ॥ १२ ॥ नर ते सर अंधवी  
क हवाय ॥ मारग चेत्य उधर तो जाय ॥ अंध  
आयो भैरव जा पाय ॥ मऊ नीधनी मुननी ज  
य ॥ १३ ॥ नय ले निरख्यो से चुन राय ॥ मणि ॥  
मोलिक मोती सुं वहाय ॥

हे वल्लभो । नरसिंहाय नमः । १२  
मोक्षयेतु ते उपपन्नो । फलसंसायादिकम्  
क्षिप्यो । केवलं नृणां नीयगलादिहं । प्रण  
म्याराम्य एतच्छब्दे जिहं ॥ १३ ॥ केवलं नृणां  
नीयगलादिमत्तम् । इत्यादि नृणां एषु पवित्र  
नदीभ्यो नृणां ह्यमणी । नरसिंहाय नमः । १४ ॥  
गणधरदेवतणे उपदेशः । इदं  
वलीदीक्षेन्मादेशः । आदनाय तणे दिह  
रो । नरसिंहाय नमः । १५ ॥ सीतानो

प्रसादउद्वेग। रतनतलीपु। मन्त्रेण। नदि  
श्रीआदिस्वरतणी। प्रतिमाध्यायीसे। ह। म।  
॥१६॥ मन्त्रदेवीनीप्रतिमावली। महीधनम  
यापीरली। बाह्यीरुहरी। वसुध। जन्माद्युज  
रलेयाप्यानतलनिवादा। १७॥ इन्द्रजीक  
प्रतिमाध्यामादा। नरतकराया। शुगुरुप्रमा  
दा। नरततली। एप्रथमवहाय। मगली। हीजं  
लिम्रेमार। ॥१८॥ डाल। नरतितले। पाट  
वमे। इन्द्रविरजययोरायोजी। नरततली।

[illegible]

अतिक्रम्याः। देवजी। जिवारीजी। इशो  
नेइकरावियो। एत्रीजी। उदारीजी। सेपे। ची  
था। देवलीकनीधणी। माहिंसमकितधारी  
जी। तिणयेवुजनीकरावीयो। एचीथीउर  
रीजी॥ सेपे॥ पांचमादेवलीकनीधणी। ज  
लेंइममकितधारीजी। तिणयेवुलदीक  
रावीयो। एपांचमीउदारीजी॥ सेपे॥ इव  
नपतिइंइनीकीयो। एतवीउदारीजी। च  
दतिआगरणीकीयो। एस्तहीइंइनी



८। सिद्धि॥ अजिमंदनपासि सुखो। सेवु  
अधिकारो जी। व्यंतरइंद करवीयो। ए०  
वमी उद्धारो जी॥ ९। सेठि चंद्रपन्नसामीनी  
योतरे। चंद्रये सरनाममल्लोरो जी। चंद्र  
जसराय करवीयो। एनवमी उद्धारो जी।  
१०॥ सो। त्रानिनाथनी सुणी दिसना। त्रानि  
नाथ शुतबु विचारो जी। चक्रधरराय  
करवीयो। ए० अमी उद्धारो जी॥ ११। सेठ  
दयरथ शुतजगदीपतो। शुनि शुब्रतखा

मीवारीजी॥ श्रीसंदूचंकरावीयो॥ एडग्यार  
मीउदारीजी॥ १२सेपे॥ पोम्वकहेल्लजे  
पीया॥ किमवुटांमीरीमायोजी॥ कहेऊंली  
येहुजतली॥ जात्राकीयांपावजायोर्ज  
१७॥ सेपेपोचैपोम्वग्रंथकरी॥ येहुजोमे-  
त्रपारीजी॥ काएचैत्यबिं-  
रमीउदारीजी॥ १४सेपे॥ समंणीयाषांण  
नीप्रतिमासुदरसुखोजी॥ श्रीदेहुज  
नीग्रंथकरी॥ श्यापीमकलयदयोजी॥

अडोहरसी वरसांजयां विष्णुमृपथीजिवा  
रोजी॥ श्रीरत्नमज्जावफकरावीयो॥ एतेर  
मोउद्वारोजी॥ १६॥ सि०॥ संवतवारितेरोतरे  
श्रीमालीरु विचारोजी॥ बाहुमदेमुहते  
करावीयो॥ एचवदमोउद्वारोजी॥ १७॥ सि०  
संवतसेरेइकोलरे॥ दित्रालहरअधिकारो  
जी॥ अमरिआहकरावीयो॥ एपनरमोउ  
द्वारोजी॥ १८॥ सि०॥ संवतपनरमत्पासीये  
वैसावसुहिसुनवारोजी॥ करमेदोसीकरा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥

एवमस्मिन्नेव उवाच ॥ १३ ॥

वलिश्रेष्ठजमातमकलांशोत्रलो

क्षोण्णम् ॥ १४ ॥ जेह्वीतेह्वीदरसल

॥ १५ ॥

त्यकरावेजेहृदयपरमाणुं समलहे

ल्योपमस्कमतेहु॥३॥ श्रीशैवुजउपरदेहु  
रिनवोनिषादेकोइ। जीरणीधारकराव  
तां। त्वानन्त्रनंतोहोय॥४॥ सिरउपरगाग  
रधरी। नितप्रजेजेनार। चक्रवर्त्तनीस्त्रिय  
इ। पांमैनवनोपार॥५॥ कातिपुनमशैवु।  
जइ। चढीकरेउपवास। नारकीसोसागर  
समी। करेकर्मनीनास॥६॥ कातीयवर्म  
तेकह्यो। जिहंसिद्धादकोमि। ब्रह्मस्त्रीवा  
लकहंत्सा। पापथीनोवेवीन॥७॥ सहस।

लक्ष्म्या त्वकनणी। लीजन पुन्य विप्रिया नो।  
जसाध पमिला जतां। जगि कित हृषी दिव्य।  
॥८॥ छाल। से जु जे गयां पाप तुटी।  
ली जे आ लोय एमोजी। तप जप कीर्ति  
हं रही। दिव्यं कर कही एमोजी। ए से पे।  
ए सो नानि चोरिकरी। ए आ लोय ए सां।  
चे न्नी दिन थै जु जे चडी। एक कं पे तप वा सं।  
॥२॥ से। वस्त्र तणी चोरी करी सात आं।  
वस्त्र धयाये जी। का ती आत ही न तप न्नी।

थां रत्ननुरणयाय ज्योतीजी॥ सिं० कांसीपी  
तलतां वारजतणी॥ चोरिकी धी जेणेजी  
आंत दिवस पुरमळ करे॥ ती लुटे गिरण  
णेजी॥ सिं०॥ ४॥ मोती प्रवाल कुंगीया  
जिणची स्वानरनारीजी॥ आंबिलकर  
करे॥ त्रिण्टंक शुद्ध अचारीजी॥ सिं० धांन  
पांणी रसचोरिया॥ तेनेटे सिद्धदेवीजी से  
हुजेत लहटी साधने॥ यमिलाने शुभ चित्ते  
जी॥ ५॥ सिं०॥ वस्त्रानुरणजिले हस्या ते





लंभादिपरिद्धाजकासधवन्मधवगुग्गुना  
रोजी॥ जलमंगेतेहनेकक्षो॥ वमसीवपसा  
रोजी॥ ११ सेषी॥ नीदिप्रस्त्रीवालककक्षी॥  
एहनोधासकजेहेजी॥ पतिमात्रागलआ  
लीयतां॥ बुटेतयकरतेहेजी॥ १२ सेषाल  
॥ संघटिकातेसोलमीए॥ एवरदेवेउद्धर  
॥ सेतुजेजात्राकरोए॥ बहरीपालतांचा  
लायेए॥ त्रेतुजेकैरीवाटसे॥ पालीतांलेय  
ऊचीयेए॥ अंधमीलीवऊध्याट॥ सेप२॥

ललितसरोवरदेवदिएएकलीलंहीकाति  
॥सिंघेतिहोदिमरंहीलीजिदिएएवमंभेचो  
तरेआवि॥३॥सिंघे। कलितानायाजभीए  
च०थेउठपरजति।सिंघेसेबुजीनहीयुअ  
हमणीएअरथुकीदिमात॥सिंघे०।च०थे  
हीगुलाजनेहमिए।कलिऊंमनमीये।दत्त  
सिंघे।बारीमांहेपेसीयेए।आणीअंगनल  
अ॥५॥सिंघे।मरुदेवी।दुकमजोहमएअनन  
०।मरुदेवी।मायुसिंघे।आंदिनाथुनिणये।

लज्जितसुपायसेवेहुं वंअपीर  
वामेपरगमोए। सोमजीसाहुमल्लारसेवेहु  
पजीअंधवीकरदीयोए। चीमुखमूलउद्धर  
से॥१॥ चोएुमप्रतिमाकरचियेए। नमति  
मांहिनलाबिंब। सी। पांचेपांमवप्रजीयेए  
अदबुधआदयलंब। ८। सेवे। खरतरव  
अहीषांतसुए। बिंबजुहंसंअनेक। सी।  
नेमनाथंचवरीनमुखताबुंअलगउदेग  
॥२॥ सी॥ धरंमद्वारमांहिनिअरुए। ऊ

गतिविरुद्धप्रतिष्ठा॥से०॥ सुहृन्नादिभु  
यदेहरेए। करमन्त्रवृत्तकक्षर॥से०॥  
मूलनायकप्रणमुंमुंदा॥आदिनाथनग  
वेतादिवजुहुरुदेहरीए। नमस्तिमां हनमं  
त॥१॥से०॥सेवुजेउपरकीजीए। ज्ञां  
चैवांमिसनान॥से०॥कलसन्नवीक्षरनो  
करीए। निरमलजिगसूगात्र॥से०॥२॥१  
प्रथमनादिश्रृंखलाकए पुंहरिकगए  
क्षर॥से०॥रायएनेएसलावलीए। त्रां

दिना प्रकृतं च ॥ १२ ॥ सेवे ॥ सत्यं सत्यं  
पद्म लान्धु ॥ चोमुमप्रतिमाचार ॥ सेवे ॥  
बीजीन्मविंवावली ॥ पुंमरीकगणधर  
॥ १३ ॥ से ॥ स्वरजकुंमनिहालीये ॥ अतीनली  
उल्लाजोलिसेचेतनतलाइसिद्धसीत  
॥ अंगीकृतुलीत ॥ सेवे ॥ आदिपुरपाते  
उत्तम ॥ ॥ त्रिधवमल्युंविम्वरंम ॥ ॥ चैत्रप  
रवामेइत्यपरकसुए ॥ सिद्धावेचितकांमसे  
॥ १४ ॥ जात्राकरीसेतुजतणी ॥ सकल

कादीनृततारसि। ऊरुनमिपुहुं। चीर  
मंघयऊपरितार। १७। सिपेनितुजीरा। इहु  
हुमणी। एसंनलज्योसऊकीय। सिपे धर  
वेवानणेजावसर। तसुजात्राकलहिय  
संवतसीलवयासीये। आवणवदिहु  
षकारसेरासुनण्योसेजुजतलो। ए नगर  
गीरमजार। सिपे १८। गऊनगबुधरतरतलो  
। श्रीजिणचंदसुरीयसेप्रथममिष्प  
श्रीपुजना। १९। अक-

तासूसीसजगजोणीयेएअमययुद्धरुवकाय।  
।सेवे।राअरओतिणरुवनीए।कणतांआण  
दयाय२१।सेवेइतीश्रीसैत्रुजानोरासर  
पूर्ण॥जिहांलगमेरुअमिगहे।तिहांलगअ  
श्रीअरसर।जिहांलगआपोथीअद।रहिज्यो  
पुणसरपुर॥१॥आद्यजोपियजोअरचजे  
हितकरदीजोदंन॥पोथीजतनेराखजो  
जुपावीसनमां॥२॥पोथीकांदुगाअ  
पुनमचंदजीवाचना॥ ॥ ॥ श्री

॥ अथ गीतमस्वामीजीनीरासलिख्यते ॥  
वीरजिनेसरचरणकमल। कमलाकैवाली।  
पलमविपन्न। लिससामीसाल। गीतमगुण  
रासी। मण्डतल्लवयणेकंतकर। निशुणी  
नोन्नविया। जिमनवन्नेचुमदेहनेहलुणग  
हसगहीया ॥ १ ॥ जंछदीवजरहवित्तनो  
नितलमंफण। मगधदेवाश्लीणीयनरेनर  
उदलबलमंफण। धणवरगुह्वरगोमनोम  
जिहंणुणगणअकू। विण्वन्नेचुचु ॥ ३



रत्नसुयोहवीनजा ॥ २ ॥ ताण्डुलसिरइंदन  
इन्द्रवलयप्रसिद्धी चवदेविद्याविबहसुना  
सीरसबुद्धी विनयविवेकविचारआरुण्य  
एहमनीहर सातहृथसुप्रमाणकायद्रपे  
रेजावर नयणवयणकरचरणजेलेपंकज  
लपामिम तेजहताराचंदसरआकासजग  
मीय सुयोहीमअणअजंगकरमेल्यानिरध  
रीय धीरममिसंगेनीरधीरा चंगीमयचामीय  
॥ २ ॥ वेषवीनिक्रवमक्रयजासजिबजेपेकिं

क्षिय। एका किल नित इच्छ गुण मे जा न्मं क्षिय  
एह दार्ष्टन्य यजम एण ये या एं चोय। रंज इ  
उम गौरी गंगर ति हां विध इह वं चिन्म। ५। न  
बुध नहि पुत्र क दं ए को इ ज सु आ ग ल द ही य।  
पे च म यो गुण या त्र तां त्र हो मे पर व री सो। क मे  
निरंतर ज इ कम मि थ्या म त मो ही य इ द य ल  
हो मे च र म नां ए दं म ल वि मो ही य। ६।  
जं बु दी व र न र ह न्ता सं मि। ७। जं बु दी व र न  
ग ध दे श मि णी य न रे स र। ध ए व र गु व र गं ८।

रत्नसुयोहवीनजा ॥ २ ॥ ताण्डुलसिरद्वन्द्व  
प्रज्ञवल्लयप्रसिद्धे ॥ चवदेविद्याविवहस्तना  
सीरसलुद्धे ॥ विनयविवेकविचारप्रारुण  
एहमनोहर ॥ सातहृद्यसुप्रमाणकायद्रपे  
रेजावर ॥ नयणवयणकरचरणजेलेपंकज  
लषामिम ॥ तेजहताराचंदसरज्जाकासजम  
मीय ॥ सुपेहीमयणअनेगकरमेल्यानिरक्ष  
रीय ॥ धीरममिसंगेत्तीरधीराचंगीमयचामीय  
॥ ३ ॥ वेषवीनिक्रवमद्रपजासजिनजपेकि

लिय। एका कि बलित इच्छ गुण मे जाये चिथे  
एह वा निश्चय जम् एण छे या एं चीय। रं गुण  
उम। गौरी गंगर तिहं विधु इह वं चिय। ५। लडि  
बुध नहि पुत्र कद ए कोइ जन्मु आगल रही यो।  
पेच अयो गुण पात्र बां बहो है परवरी मो। करे  
निरंतर जइ कम मिथ्या मत मो हीय इण बल  
हे स्ये चरम नां ए दं अण दि मो हीय। ६। वस्तु।  
जं बुद्धी वरजर हला संभि। श्री ली तल मे मणो। म  
गध देश मिणी यन रे सर। धण वर गु वर गो म ति हं

विष्णवैवस्वतुष्टुसंहरतस्फपोहवीनद्या केह  
वीमयणगुणगणरुवनिहंण। ताणपुत्तवि  
जानिलो। गोयमअतिहीस्रजांण॥९॥ त्वं वए  
चरमजिणसरकेवलनांणी॥ चोविहअंधप  
यवजांणी॥ पावापुरसांमी संपत्तो॥ चउविदे  
हनि कार्येजुत्तो॥८॥ देवहिअमवअरणतिह  
कीजे॥ जिणहिवांमिथ्यामतषीजे॥ त्रिपुत्रन  
उरुसिंहासनवैवा॥ ततषिणमोहदिगंतये  
वा॥१॥ क्रोधमानमायामदक्षरा॥ जयेनाव

जिमदिनचोरदिदडंडनिअकाभेवाजी।६  
रमनरेसआमागजी।१०। ऊसमतहिद्विरे  
चेतिहंदेवा।चतुश्रवइंजमंगेलेवा।चा  
मरवन्नमिरऊधरसीह।रुपेहिजिणवरजय  
मऊमीहं।११। उपममरयुजरवरसंता।जी  
जननूमिवषाणकरंताजोलेवरईमांननि  
नरायण।सरनरकिंनरआवेयाथो।कंतयमे  
हीजलहलंकंता।गयणविमोलेरणरएन्नेत्ता  
पेयवीइइन्नइमनचिंती।३२

अथैति॥१३॥तीरतरंककलिभतेवहताम्रम  
नुरणपूकतागहगता॥तीक्ष्णीमांनेगोय  
मजंये॥इणअवसरकोपेतएकंये॥१४॥पु  
जानीकअजांएपाबीलै॥सुरजांणंताइम  
कांइमीलै॥मो<sup>ग</sup>लकोइजांणनणीजे॥मिअ  
हिअवरकिमनुपमादीजे॥१५॥त्वत्क॥वी  
रजिणवरइनांणसंपन्न॥पावापुरसरमही  
ए॥पत्तनाहसंसारतारण॥तिहुंदेवेनिम्मकिअ  
अमवसरणवकुसुमकरण॥जिणवरलग

३। तेजे जिमदिनकाराग्रिंघासणसोमीठव्यो  
ऊवीतीजयजयकार॥१५॥ नातोः  
योघणमोणगजे। इन्द्रइन्द्रइन्द्रदेवती। ऊं  
करीसंचरीया। कवणसजिनवरदेवती॥१६॥  
जीजनन्मिश्रमवसरण। देववी  
ती। दहदिमदेवविबुधवध्नेलीश्वरदे  
ती॥१७॥ मणिमयतीरणदेवधनकोसीसैन  
वधादती। वयस्विवर्जतिजेनुगण॥ प्रा  
जन्मावती।



कर्मते॥१॥ अतीरतरं कलिमतैव हताश्रम  
वदुरणपुङ्गवागहगता॥ तीक्ष्णनीमांने गोय  
भजंये॥ १८॥ अत्र सरकोपेतणुकंये॥ १९॥ पु  
तालीकन्त्रजां एपावीते॥ अरजां एतां इम  
कां इमोते॥ मोर्गलको इजां एनणीजे॥ मित्र  
हिन्त्रवरकिमनुपमादीजे॥ २०॥ वृत्त॥ वी  
रजिणवरनां एसंवन्त॥ पावापुरस्करमही  
य॥ पक्षनाहससारतारण॥ तिहं देवे निम्नकिन्त्र  
अमवशरणवृत्तस्य करण॥ जिणवरजग

१। तेजे जिमदिनकार। त्रिंघासण सोमीठव्यो ।  
ऊवीतीजयजयकार ॥ १५ ॥ ना। लो ॥ तीचढी  
यो घणमोणगेजे। इन्द्रन्तुइन्द्रदेवती। ऊंकारो  
करीयेचरीया। कवणसुजिनवरदेवती ॥ १७  
जीजनन्तुमिश्रमक्यरण। ऐषवीप्रथमारंज  
ती। दहदियदेवविबुधवधकृष्णावेतीशुररंज  
ती ॥ १८ ॥ मणिमयतीरणदेरुधजांकीसीसेन  
वघाटती। वयसुविवर्जतिजेतुगणा। प्रातिहार  
जन्मावती ॥ १९ ॥ सरस्वरकिंनरअमुरवर। ॥

इंद्र इंद्राणी रायती ॥ चित्तचमकी इमं चित्तवे एसेवं  
तां प्रनुपायती ॥ २० ॥ सहस्रकिरण सोमी वीर  
जिण ॥ येसवीरुव विसालती ॥ एह असंजम अंज  
मे ए ॥ साचो ए इंद्र जालती ॥ २१ ॥ तीबीला वैत्रि ॥  
जगगुरु ॥ इंद्र इंद्रतामिणती ॥ श्रीमुखसंसयसां  
मीसवे ॥ फेने वेदपणत्ती ॥ २२ ॥ मांनमेलमद्वे  
लकरे ॥ नगतेनां मेसीसती ॥ येचसयां सुवतली  
यो ए ॥ गोयमपेलीसीसती ॥ २३ ॥ बंधवसेजमसु  
तेवीकरे ॥ अग्नि इंद्रावेयती ॥ नांमले इंद्रा

नाथकरे। तीपिण्यतिबोधयती॥२४॥ इत्यञ्जः  
उक्रमगणहरयण। थापादिरऽप्यरती। तीमुप  
कीनवनपुम्हं। मेयमस्तेवलनाप्यती॥२५॥ वि

॥ २५ ॥ वि

॥ २५ ॥ वि

॥ २५ ॥ वि

॥ २५ ॥ वि

॥ २५ ॥ वि

सती माणहरणाय अथ ॥ २७ ॥ नासिन्नाल्लुङ्गवीर  
निहं ॥ आ जयत्वे जिम पुन्य नरो ॥ दीठा गोत मस्वां  
म ॥ जां निय नयणे अर्मा य नरो ॥ २८ ॥ सम व अ  
रण मकारि ॥ जिज संसा नय जिए ॥ ते ते पर उ प गार  
कारण प्रत्वे मु निय वरो ॥ २९ ॥ जिहां २ दी जे दि  
व ॥ तिहां २ केवल ऊ प जिए ॥ आप क ने न व नि द  
गो य म दी जे दं न इ म ॥ ३० ॥ पु रु उ पर पु रु अ ति  
आं मी गो य म उ य नी य ॥ इ ल व ल के व ल नां ए  
रा म ज रा स्त्रे रं ग न रे ॥ ३१ ॥ जो अ ण प द अे ल

वां देच छवीवी मजी ए। आतम लब्ध विवित्रेण  
चरम मरी रे सोय मूणी ॥ १२ ॥ ५० ॥ देना नानि  
सुले विगीय मग ए। हर मंच लिय। ताप मय न  
रे से एम। त्सां मुनि दी वो आव तो ए। वय सो ए सीय  
निय मंग। अमो मक्ति न उपजे ए। कि मुच छ सीय  
छ काय गज जिम दी से गा ज तो ए ॥ १३ ॥ गिऊ  
उ ए ५० ॥ अजी मां न। ताप सजी म नि चिंत दे ए  
ती मुनि च छीया विग। आलें सु दी न . ५०  
॥ ३४ ॥ कंजन म ए निष्फल। दं क ल अ थ

जवमसहीय। येमवीपरमानंद। जिणहरनरते  
अरवहीय॥३५॥ नियश्कायप्रमाण। चिऊंदि  
अग्रंहीय। जिणहबिंब। पणमवीमनउत्तास।  
गोयमगणहरतिहंवसीय। ३६॥ वयरस्वाम  
नीजीव। तिर्येकजंनकदेवतिहं। पतिवोधि  
पुंमरीक। ऊंमरीकअधेननली॥३७॥ वल  
तोगोयमसाम। सवितापसप्रतिवोधक  
रे। लिश्अपणेसाथचालेजिमजूयाधीपती  
॥३८॥ वीरषांनघतआण। अमीयहूळं

गुह्यवै। गीयमएकलपात्रकरावै पारणे-  
वै॥४०॥ पंचमयां शुभनावा। उजलचरीयो  
षीरमिश्री। आचणु रुद्रं जोग। कव। लं ल के  
वल रूप कुवा॥४१॥

मवसरण प्रकार त्रियापिषवी केवलनां ए उ  
पनो उजोय करै॥४२॥ जां ऐ जिण पिह्म गाजं  
तिघण मेघ जिम। जिनवां एी नसू ऐ धिनां एी  
कुवा पंचमयां॥४३॥ वस्तु  
ना ए संपन्न पन्न रे सय यं र वरीय हरिये



रिद्धिनिष्ठानाहवन्दे। जालेविजयमुद्रवयलति  
हानांलक्षणानिदं। चरजिनेश्वरमन्त्रे  
गोयमविषयसंश्लेषे। विहजाएन्नापणमह  
हेम्पांलुलविषय॥४४॥ ज्ञासेस्वांमीयीएवीर  
जिणंदप्रनमचंदजिमनुलसिय। विहरतो  
एनरवासांमि। वरअवहेशरसंवसीय॥४५॥  
५॥ ववतीएएकणपुमिअ। पायकमल  
अंधेअहीय। न्नावीयीएनयणानंदनयर  
पावपुंरमहिय॥४६॥ वेषवीयोएगी

यमसांमि। देवशरमाप्रतिबोधकरे। निद्रा  
पणे एत्रिअलादेवनंदनपुहतापरमपण॥ ४५  
बलतो एदेवआकास। पेधवीजां। एपी ति।  
एअमए। तोमुनि एमनविषवाद जादनेद  
जिमउपनोए॥ ४६॥ ऊंअंमे एध्वांभीयोदि  
आपकंन। फटालीयो एजां। एंती एत्रिजं  
एनाह। लोकविवाहारनपालीओ। एंती  
नली एकिधुं। सोमाजां। एंकीवलमंगयेए  
चितवुएचालकजीमा। अहवाकिमेनलागये।

१॥५०॥ ऊं किम ए विरजिणं हृन्मगते जी ले जी  
ल गो ए । आं पणी ए उब्बी ने ह । ना ह न मं पे सा  
च वी ए । सा चो ए वी त रा ग ने ह न जां णि ला ली  
यो ए । इ ए स मे ए गो य म चित । रा ग वे रा गि वा  
ली यो ए । ५२ आ वं ती ए जे उ ल ट । रहि ती रा  
गे सा ही यो ए । के व लु ए नां ण उ प न्न । गो य म  
मु ग ति उं मा ही यो ए । ५३ त्रि भु व न ए ज य २  
का र । के व ल म हि मा स्म र क रे ए । ग ण ध र ए  
क र य व ञां ण । न वि यो न व जि म नि स्त रे ए

५४॥ वस्तु ॥ षडमगणहर रत्न रस ५ चा ॥  
गिहा वाम्र वशीय ॥ तीम्ब वस्त्रर्ज जम लिङ्ग  
सिय ॥ प्रिर केवल नोण पले त्वा रेवर सति  
ऊम्ब गन मुसीय ॥ १७ जय हीन गरी वकी  
एव रस्य उस्वां मी गोय म्पुण निली ॥ लिङ्गे  
शिव पुर वा ॥ ५५ ॥ तवणी ॥

हि कै ॥ जिम चंदन सो गंध निधि ॥  
लहिरौ लहके ॥

लिमगोयमसोनागनिधिः॥५॥ जिममोनअ  
शेवरनिवन्नेहंआ॥ जिमसूरतरुनीकर  
यवंतंसा॥ जिममऊअरनाजीववने॥ जि  
मरयणायरयणेविलन्ने॥ जिमअंवर  
तारागणविलसे॥ जिमगोयमगुणकेल  
वन्ने॥५७॥ अन्यमनिअजिमशशिअर  
ओहे॥ सरतरुमहिमाजीमजगमीहे॥ प्र  
वदिआजिमसहसकरो॥ पंचाननजिम  
गिरवरराजे॥ नरवरघरजिममंगलगार्जे

तिमजिनसासनमुंयवरो। पछजिमस्सरतरु  
वरसीहिसाषा। जिमउत्तममुषमधरीनाषा  
जिमवनकेतकीमहमहीए। जिमजूमीपति  
हंयबलचमके। जिमजिनमंदरघंटारण  
के। गीयमलबधेगहगहीए॥५९॥ चिंताम  
णकरचढीयोन्नाजास्सरतरुसारिवंबित  
काजकांमऊंनअवीवअऊवाए। कांमग  
वीधरैननकांमी। अष्टमाहुसिधजावे :  
मी। सोमीगीयमअनुसरीए। ६ : :

अथैकोपनणितै। मायाबीजोऽवणु  
णितै। श्रीमतीसीतासंनवेए। देवांधुरञ्जरी  
हंतनमीजै। विनयप्रभुउवजायथुणीजै  
इणमंत्रेगीयमनमोए। परश्वश्रतांकांइ  
करीजै। देशदिशांतरकोयनमीजै। क  
वणकाजआयासकरो। प्रहउवीगीयमश्र  
मरीजै। काजसमंगलततमीणसीजै। न  
वनिधविलसेतासधरो॥ ६२॥ चवदेयेबा  
नोतरवरसे। गीयमगणहरकेवलदीवये

कियो कवित्त उपगार करे । . . . .  
एह नणी जै । परब्रम होब वपे ली दी जै रिधि  
दृष्टि कल्याण करे ॥ ६२ ॥ धन माता जिण ऊ  
अरे धरीयो । धन पिता जिण ऊ  
रीयो । धन मह गुरु जी दिखीयो ए ।  
त विद्या ज्ञान छि । जस गुण पोहवीन ला जै  
पार । त पसुपे करी गुण नी लो ए ॥ ६४ ॥ अ ।  
गेतम स्वां मी जी रो रा स नणी जै । चो विह  
अंघर ली या अत की जै । वरु निमसा



ॐ शिवेली यन्न एतै। मां या बीजी श्रवण सु  
णी जै। श्रीमती सीता से न वे ए देवां धुरञ्ज रि  
हंत नमी जै। विनय प्रभु उव जाय शुणी जै  
इ ए मंत्रे गीय मन मो ए। परश्वश्र तां कां इ  
करी जै। देश दिशांतर कां य नमी जै। क  
वण काज आया सं करी। प्रहृ उवी गीय मश्र  
मरी जै। काज सं मंगल तत श्रीण सी जै। न  
वनिध विल से ता स घरी॥ ६२॥ च व दे श्रे वा  
नो तर वर से। गीय मगण हर के वल दी व श्रे

कियो कवित उपगार करे । आदिहमंगल  
एह जणीजे । परब्रमहे ब्रवये दीक्षे रिद्धि ।  
वृद्धि कल्याण करे ॥ ६२ ॥ धनमाता जिणकु  
अरे धरीयो । धनपिता जिणकुल अमृत  
रीयो । धनमहगुरु जीदिखीयो । विनयवं  
त विद्यामंजरी । जस गुणयोहवीन जाने ।  
पार । तपस्ये करी गुणनीलो ॥ ६४ ॥ श्री  
गेतमस्वामी जीरी रास नणीजे । चीविह  
अंधर लीयायत कीजे । चरु निमसायावी

सुरीए। जं। जं। चंदन। बनी। दिरा। वो। मां। ए। क।  
मी। त्पां। ची। क। पुरा। न। रय। ए। सि। ह। स। ए। बै। स। ए।  
ए॥ ६५॥ ति। हं। बै। ठी। प्र। नु। दे। स। ना। दे। वी। न। वि।  
क। जि। वां। ना। का। र। ज। स। र। सी। श्री। वि। न। य। न।  
इ। म्। रि। इ। म। न। ए॥ ६६॥ इ। टी। श्री। गी। ता। मा। स।  
मी। जी। नी। रा। स। सं। प्र। णं॥ मं। व। त। १२२२। रा। मी।  
ती। आ। सो। ज। नु। दी। १२॥ नि। म। तं। मा। हा। तं।  
वि। द्या। ला। त॥ फ। ली। धी। म। धी॥ का। नु। मा। पु।  
न। म। चं। दं। जी। वा। न। न। र्थ॥ ॥ श्री॥ ॥ १२॥

